Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 48

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बद्र

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

26 रबीय्युल सानी 1443 हिज्री कमरी 2 फतह 1400 हिज्री शम्सी 2 दिसम्बर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

उत्तम कर्म

(1519) हज़रत अबूहुरैरह रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कर्मों में से कौन सा कर्म उत्तम है?आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना। पूछा गया :फिर इसके बाद कौन सा? फ़रमाया: अल्लाह तआला के मार्ग में जिहाद करना। पूछा गया :फिर कौन सा? फ़रमाया: वह हज जो सरासर नेकी और आज्ञापलन पर आधारित हो।

हज का महत्तव

(1521)हज़रत अबूहुरैरह रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने अल्लाह के लिए हज किया और फिर तामसिक बात न की और न अल्लाह के आदेशों की ना-फ़रमानी की तो वह ऐसा ही (पवित्र) हो कर लौटेगा जैसा उस दिन (पवित्र)था, जिस दिन उस की माँने उसे पैदा किया।

तलबीह के अलफ़ाज़

(1549)हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लब्बैक यह था: لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ अर्थात मैं हाज़िर हूँ। हे मेरे अल्लाह मैं हाज़िर हूँ। मैं हाज़िर हूं । तेरा कोई शरीक नहीं। मैं हाज़िर हूँ। हर ख़ूबी और हर एक नेअमत तेरी ही है और बादशाही भी तेरी ही है। तेरा कोई शरीक नहीं।

(सही बुख़ारी , भाग 3 किताबुल हज्ज, प्रकाशन 2008 ई कादियान)

हमेशा अपने कर्म और कथन को ठीक रखो जैसा कि सहाबा रज़ि ने अपनी ज़िन्दगियों में दिखाया हज़रत अबू बकर रज़ि के नमूना को हमेशा अपने सामने रखो, उन्होंने वह दोस्ती का हक़ दिखाया कि इस की तुलना दुनिया में नहीं पाई जाती।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो का अनुमपनीय सच्चाई

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो हज़रत अबू बकर रज़ि को सिद्दीक़ का ख़िताब दिया है, तो अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि आप में क्या-क्या कमाल थे। यह भी फ़रमाया है कि हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो की फ़ज़ीलत उस चीज़ के कारण से है जो उस के दिल के अंदर है और वास्तव में अबू बकर रज़ी अल्लाह अन्हो ने जो सच्चाई दिखाई है ,उसका उदाहरण मिलना कठिन है। और सच तो यह है कि हर ज़माना में जो शख़्स सिद्दीक़ के कमाल प्राप्त करने की इच्छा करे उसे ज़रूरी है कि अबू बकर वाली आदतें और फ़ित्रत को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक सम्भव है चेष्टा करे और फिर जहां तक हो सके दुआ करे। जब तक अबू बकर वाली फ़ित्रत का साया अपने ऊपर डाल नहीं लेता और इसी रंग में रंगीन नहीं हो जाता वे कमाल प्राप्त नहीं हो सकते।

अबू बकर की फ़ित्रत क्या है

अबू बकर वाली फ़ित्रत क्या थी? इस पर विस्तार से बेहस और बात का यह अवसर नहीं, क्योंकि बहुत उस को वर्णन करने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है। संक्षिप्त में एक घटना वर्णन करता हूँ कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत की घोषणा फ़रमाई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हो शाम की तरफ़ गए हुए थे जब वापस आए तो अभी रास्ता ही में थे कि एक व्यक्ति उनसे मिला। उस से मक्का के हालात पूछे और कहा कि कोई ताज़ा ख़बर सुनाओ। यह नियम की बात है कि जब इन्सान सफ़र से वापस आता है तो अगर कोई वतन वाला मिल जाए तो उस से वतन के हालात पूछता है उसने कहा कि नई बात यह है कि तेरे दोस्त (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम) ने पैग़ंबरी का दावा किया है आपने सुनते ही कहा अगर उसने यह दावा किया है तो बे-शक वह सच्चा है। इस से मालूम होता है कि आप

शेष पृष्ठ 11 पर

लोगों में जो जिन्न मशहूर हैं इन का कोई वजूद नहीं

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो जिन्न ईमान लाए थे वे इन्सान ही थे।

सूरत अलजिन्न और सूररत अहक़ाफ से मालूम होता है कि जिन्नों की एक जमात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाई थी और हदीसों से भी पता चलता है कि जिन्नों का एक वफ़द रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात के लिए आया था। सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं

“अब रहा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना का सवाल कि इस वक़्त जो जिन्न ईमान लाए थे वे कैसी मख़लूक़ थी। अत: उस के बारे में क़ुरआन करीम से साबित है कि वे यहूदी थे क्योंकि वे मूसा की किताब का और उस पर ईमान लाने का ज़िक्र करते हैं। अत: मालूम हुआ कि वे यहूदी लोग थे। अल्लाह तआला ने उनको जिन्न इस लिए कहा है कि वे बाहर के लोग थे और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से छिप कर मिले थे। कई हदीसों से मालूम होता है कि वे नसीबैन के रहने वाले थे और रात के वक़्त रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिले थे। (बुख़ारी किताबुल मनाक़िब अल-अन्सार व मुस्लिम भाग 1)वापस जाकर जो घटना उनके और उनकी क़ौम के बीच गुज़री , अल्लाह तआला ने इस का ज़िक्र क़ुरआन करीम में फ़रमाया है। मालूम होता है अरब लोगों के विरोध के कारण से उन्होंने छुप कर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत की और आप से क़ुरआन सुना। जब वापस हुए तो दिलों ने गवाही दी कि आप सच्चे हैं और अपनी क़ौम में तब्लीग़ शुरू कर दी ।

इस बात का सबूत कि ये जिन्न इन्सान थे निम्नलिखित है पहला यह कि वे छिपकर मिले अगर वे जिन्न थे तो उनको छुप कर और रात को मिलने की क्या ज़रूरत थी ऐलान कर के मिलते तो कोई उनका क्या बिगाड़ सकता था और जिन्नों की जो शान वर्णन की जाती है इस की दृष्टि से उन्हें देख भी कौन सकता था।

द्वितीय क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ (फत्ह रकूअ 1/9) अर्थात मोमिनो ! हमने यह रसूल इस लिए भेजा है कि तुम उसकी मदद और सहायता करो और उसकी इज़्ज़त

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है
(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत क़ादियान (भाग-3)

(एतराज़ नम्बर 7) आरोप लगाने वाले ने क़ुरआन मजीद की पाँच आयतें लिख कर यह धोखा देने की कोशिश की है कि उनमें क़ुरआन मजीद ने अच्छी बातें वर्णन की हैं। और आरोप लगाने वाले के निकट ये तो अल्लाह की वाणी है जिन 26 आयतों का च्यन आरोप लगाने वाले ने प्रस्तुत किया है इस के विचार में ये अल्लाह का कलाम नहीं है उनको बाद में बढ़ाया गया है

जवाब: पिछले पृष्ठों में सुदृढ़ तर्कों के साथ यह प्रमाणित किया गया है कि क़ुरआन-ए-मजीद में बिसमिल्लाह की' ब ''से लेकर वन्नास की ''स' तक सब का सब अल्लाह का कलाम है जो अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम के द्वारा सय्यदना मुहम्म द सल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया। और हुज़ूर के द्वारा यह कलाम हज़ारों ,लाखों मुस्लमानों के हाफ़िज़ा में बहिफ़ाज़त स्थानतिरत हुआ और आज तक होता चला आ रहा है अत: इन आयतों की व्याख्या की न कोई वजह है न दलील!

क़ुरआन-ए-मजीद में हर उस विषय का वर्णन किया गया है जिसकी इन्सानी ज़िंदगी को क़यामत तक ज़रूरत हो सकती थी इस में अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद को मज़बूत तर्कों के द्वारा सपष्ट किया गया है कायनात की सृष्टि और इस के भेद को तर्कों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी तरह इन्सानी ज़िंदगी के विभिन्न पक्षों के लिए जो ज़रूरतें थीं उस के बारे में हिदायतें दी गईं हैं। मसलन मुआशरत, अज़्दवाजी ज़िंदगी और उसके मामलों के बारे में ,तर्बीयत औलाद, अत: ये कि वे समस्त विषय जिसकी ज़रूरत इन्सान को थी, है,या क़यामत तक होगी

यह भी याद रहे कि क़ुरआन-ए-मजीद में इन्सान की इन हालतों और जरूरतों का भी वर्णन किया गया है जो समय के साथ साथ बदलते रहते हैं और हर हालत के बारे में मार्ग दर्शन फ़रमाया है उदाहरण के तौर पर क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को यह हुक्म दिया कि नमाज़ पढ़ने से पहले पानी से वुज़ू कर लिया करें। फिर ये भी फ़र्मा दिया कि अगर तुम्हें पानी न मिले तो साफ मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो فَتَيَمَّمُوۡا صَعِيۡدًا طَيِّبًا (सूरत अलमायदा,नम्बर 7) तो ख़ुशक़ साफ मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो। अब इस वुज़ू के मसले में ही दो हालतें बयान की गई हैं उमूमी हालत में हर सेहत मंद मुस्लमान को नमाज़ अदा करने से पहले पानी से वुज़ू करना है दूसरी हालत यह बयान हुई कि अगर पानी उपलब्ध न हो तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर के नमाज़ अदा करनी है अब अगर कोई दरिया ,नहर या चश्मा के किनारे पर बसने वाला इन्सान यह कहे कि मुझे तो हरवक़्त पानी उपलब्ध है और मैं पानी से वुज़ू कर सकता हूँ अत: तयम्मुम वाला हुक्म मैं अपने क़ुरआन से निकाल देता हूँ क्योंकि उसकी मुझे ज़रूरत नहीं है तो हर अक़्ल वाला इन्सान ऐसे ख़्याल रखने वाले को समझाएगा कि क़ुरआन-ए-मजीद का यह हुक्म केवल तुम्हारे से ही विशेष नहीं है बल्कि उसी वक़्त अफ़्रीक़ा के जंगलों और मरुभूमि में भी ऐसे मुस्लमान हैं जिनके पास पानी की एक बूँद नहीं और वह वहां अल्लाह तआला के दूसरे आदेश के अनुसार तयम्मुम कर के नमाज़ अदा करेंगे। अत: सपष्ट हुआ कि हर हालत तथा ज़मान एवं स्थान के बदलने के साथ क़ुरआन-ए-मजीद के आदेश और शिक्षाएं अलग अलग हैं।

सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों का मुबारक ज़माना दो हिस्सों में विभाजित है 1) मक्की ज़माना: इस तेरह वर्ष के ज़माने में अल्लाह तआला ने सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ुल्म सहने और बर्दाश्त करने और सब्र की शिक्षा दी। 2) मदनी दौर: जब कुफ़्फ़ार मक्का मुस्लमानों पर चढ़ाई करने के लिए मदीना तक पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने इस दौर में मुस्लमानों को अपने बचाओ ,हिफ़ाज़त और प्रतिरक्षा के बारे में शिक्षाएं और हिदायतें दीं।

हर दो ज़मानों के हालात और मांग अलग अलग थी। आरोप लगाने वाले ने जो 26 आयतें पेश कर के येह प्रभाव देने की कोशिश की है कि उनमें दहशतगर्दी की शिक्षा दी गई है यह बहुत ग़लत है। क़ुरआन-ए-मजीद के अध्ययन से पता चलता है कि यह वह हालात थे जब मुस्लमान अपना बचाओ कर रहे थे। हालाँकि मुस्लमान मदनी दौर में भी किसी प्रकार का क़िताल या जंग करना नहीं चाहते थे जैसा कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में हुक्म दिया कि

كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الۡقِتَالُ وَهُوَ كُرۡهٌ لَّـكُمۡۚ وَعَسٰۤى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ خَيۡرٌ لَّـكُمۡۚ وَعَسٰۤى اَنۡ تُحِبُّوۡا شَيۡـئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّـكُمۡؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ (

(सूरत अलबकर, नंबर 217)

अनुवाद : तुम पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया गया है जबकि वह तुम्हें नापसंद था। और संभव नहीं कि तुम एक चीज़ नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो। और मुम्किन है कि एक चीज़ तुम पसंद करो लेकिन वह तुम्हारे लिए बुराई फैलाने वाली हो। और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते।

इसी तरह वे आयतें नाज़िल हुईं जिनके बारे में इस्लाम के विरोधी कहते हैं कि उनमें दहशतगर्दी और उग्रवाद की शिक्षा दी गई है अगर इन आयतों की क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूदगी दहशतगर्दी का कारण समझा जा सकता है तो फिर यह उसूल तो समस्त धर्मों की धार्मिक पुस्तकों पर लागू होना चाहिए धार्मिक किताबों से कुछ उदाहरण वर्णित हैं।

तौरात और इंजील में जंग की तालीम

जब ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा उसे अर्थात किसी शहर को तेरे क़ब्ज़ा में कर दे तो वहां के हर मर्द को तलवार की धार से क़तल कर मगर औरतों और लड़कियों और चौपायों को जो कुछ इस शहर में है इस का सारा लूट अपने लिए ले।

(इस्तिस्ना, अध्याय 20 आयात 12,13)

" वे इन क़ौमों के शहरों में जिन्हें ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा तेरी मीरास कर देता है किसी चीज़ को जीता न छोड़। "

(इस्तिस्ना ,अध्याय आयत 61)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इंजील में फ़रमान है कि यह न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलाने आया हूँ। (इंजील, मति ,अध्याय 10 आयत 34)

गीता में जंग के बारे में तालीम

इसी तरह हमारे देश भारत में श्रीकृष्ण जी महाराज के हुक्म पर कुरूक्षेत्र के मैदान में 18 दिन महाभारत की जंग लड़ी गई और जब अर्जुन अपनी कमान फेंक कर दिल हार कर बैठ गया और जंग से इन्कार कर दिया तो श्रीकृष्ण जी महाराज ने उसे जंग की तालीम दी बावजूद उस के कि उसके मुख़ालिफ़ीन में उसके सामने क़रीबी रिश्तेदार और उस्ताद द्रोणाचार्य भी शामिल थे। श्रीकृष्ण जी महाराज ने अर्जुन को कहा। (गीता दूसरा अध्याय)

(अनुवाद 31) और अपने धर्म को देखकर भी तुझे भयभीत न होना चाहिए ,क्योंकि क्षत्रिय के लिए धर्मयुध (धर्म की लड़ाई) से बढ़कर और कोई बेहतरी देने वाला करतब नहीं।

(अनुवाद 32) और हे पार्थ मुबारक और ख़ुशनसीब हैं वो क्षत्रिय जिन के लिए स्वर्ग का दरवाज़ा खोलने वाली ऐसे धर्म युध ख़ुद बख़ुद (बग़ैर बुलाए हुए)आई है।

(अनुवाद 33)और अगर तो इस धर्म युध संग्राम को नहीं करता तो अपने स्वधर्म नेक फ़र्ज़ और कीर्ति(नेक-नामी) से वंचित हो कर पाप में गिरता है।

(अनुवाद 34)और सब लोग बहुत दिनों तक तेरी बदनामी का वर्णन करते रहेंगे। बाइज़्ज़त आदमी के लिए बदनामी मौत से भी बड़ी है।

(अनुवाद 35)बड़े रथों वाले जंग करने वाले कहेंगे कि तो डर कर लड़ाई से भागा है और जो लोग तेरी उत्तम तारीफ़ें करते थे वे तिरस्कार करेंगे।

(अनुवाद 36)तेरे दुश्मन तेरी शान में अनुचित शब्द प्रयोग करेंगे। तेरी ताक़त का उपहास उड़ाएंगे, इस से ज़्यादा दुखदायक और क्या हो सकता है।

(अनुवाद 37)अगर मरा तो बहिश्त(स्वर्ग) में जाएगा। अगर विजित होगा तो ज़मीन की सलतनत और ख़ुशियों में जाएगा। इस लिए हे कुंती पुत्र तू लड़ने के लिए

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

“ख़ुलफ़ा पर कोई ऐसी मुसीबत नहीं आई जिससे उन्हों ने ख़ौफ़ खाया हो और यदि आई तो अल्लाह तआला ने उसे अमन से बदल दिया’’

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना और इस के पीछे के कारणों का विस्तारपूर्ण विश्लेषण

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 अक्तूबर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत की घटना पिछले दिनों ख़ुत्बे में वर्णन हुई थी। इस बारह में कुछ मज़ीद बातें हैं जो वर्णन करने वाली हैं। सही बुख़ारी की जो रिवायत वर्णन की गई थी इस से यह ज्ञात होता था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर जब हमला हुआ तो उसी वक़्त फ़ज्र की नमाज़ अदा की गई। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त मस्जिद में ही थे। जबकि दूसरी रिवायत में मिलता है कि फ़ौरी तौर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को घर ले जाया गया और नमाज़ बाद में अदा की गई जैसा कि सही बुख़ारी के शारह अल्लामा इब्ने हिज्र इस रिवायत के नीचे एक दूसरी रिवायत नक़्ल करते हुए लिखते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ून ज़्यादा बहने लगा और उन पर बेहोशी हो गई तो मैंने उन्हें लोगों के साथ उठाया और उन्हें घर पहुंचा दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर बेहोशी तारी रही यहां तक कि सुबह की रोशनी नुमायां हो गई। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने हमारी तरफ़ देख कर फ़रमाया क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है? तो मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उस का कोई इस्लाम नहीं जिसने नमाज़ छोड़ी। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी।

(फ़तह अलबारी, भाग 7 पृष्ठ 64 शरह हदीस नंबर 3700 दारुल मारूफ़ बेरूत) (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 263 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

इसके अतिरिक्त तब्कातुल कुब्रा में भी यही है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को उठा कर घर पहुंचाया गया और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने नमाज़ पढ़ाई। तथा यह भी मिलता है कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन-ए-करीम की सबसे छोटी दो सूरतें إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ وَالْعَصْرِ और الْكَوْثَرَ पढ़ीं और एक जगह قُلْ يٰٓأَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ وَالْعَصْرِ और पढ़ने का वर्णन है। (अत्तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 266 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल का वर्णन करते हुए तब्कातुल कुब्रा में लिखा है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया जाओ और दरयाफ़्त करो कि किस ने मुझे क़तल करने की कोशिश की है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं निकला और मैंने घर का दरवाज़ा खोला तो लोगों को जमा देखा जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाल से नावाक़िफ़ थे। मैंने पूछा कि किस ने अमीरुल मौमेनीन को ख़ंजर मारा है? उन्होंने कहा कि अल्लाह के दुश्मन अबू लूलूह ने आपको ख़ंजर मारा है जो मुग़ीरा बिन शोबा का ग़ुलाम है। उसने और लोगों को भी घायल किया है लेकिन जब वह पकड़ा गया तो उसी ख़ंजर से उसने ख़ुदकुशी कर ली।

(अत्तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 263 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई.)

इस बारे में कि क्या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत कोई साज़िश का परिणाम था या उस व्यक्ति की व्यक्तिगत दुश्मनी थी, बाद के कुछ इतिहासकारों ने यह भी लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत केवल किसी व्यक्तिगत दुश्मनी के आधार पर नहीं थी बल्कि एक साज़िश थी। बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बहादुर ख़लीफ़ा को जिस तरह शहीद कर दिया गया, हम देखते हैं कि आम तौर पर इतिहासकारों और जीवनी लेखकों ने शहादत की घटनाए विस्तार के साथ वर्णन करने के बाद ख़ामोश हो जाते हैं और यह तास्सुर मिलता है कि अबू-लूलू फ़िरोज़ ने एक वक़्ती जोश और ग़ुस्सा में उन्हें क़तल कर दिया था। लेकिन हाल के कुछ इतिहासकारों, जीवनी लेखकों ने इस पर विस्तार के साथ बेहस करते हुए यह वर्णन करते हैं कि यह केवल एक फ़र्द-ए-वाहिद के ग़ुस्सा की वजह से बदले की कार्रवाई नहीं हो सकती बल्कि एक साज़िश थी और बाक़ायदा एक पहले से तय-शुदा योजना के तहत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल किया गया था। और इस साज़िश में प्रसिद्ध ईरानी सिपहसालार हुरमुज़ान जो कि अब दिखावे के लिए मुस्लमान हो कर मदीना में रह रहा था वह भी शामिल था। वर्तमान के इन लेखकों ने क़दीम इतिहासकारों और जीवनी लेखकों से शिकवा किया है कि क्यों उन्होंने इस अहम क़तल पर तफ़सीली बेहस नहीं की कि यह एक साज़िश थी।

जबकि तारीख़ और सीरत की एक अहम किताब “अल् बिदाया वन्नहाया” में केवल इतना मिलता है कि संदेह किया जाता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल में हुरमुज़ान और जुफ़ेना का हाथ था। (अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 4 पृष्ठ 144 दारुल क़ुतुब इल्मिया) इसलिए इसी संदेह पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवनी लिखकों ने पूर्ण बेहस करते हुए इस को बाक़ायदा एक साज़िश क़रार देते हैं।

इन्ही लेखकों में से एक मुहम्मद रज़ा साहिब अपनी किताब सीरत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु में लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किसी बालिग़ क़ैदी को मदीना में आने की आज्ञा नहीं दिया करते थे यहाँ तक कि हज़रत मुग़ीरा बिन शुबा कूफ़ा के गवर्नर ने उनके नाम एक ख़त लिखा कि उनके पास एक ग़ुलाम है जो बहुत प्रतिभाशाली है और वह उस को मदीना में आने की आज्ञा के तलबगार हैं और हज़रत मुग़ीरह बिन शुबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि वह बहुत काम जानता है जिसमें लोगों के लिए फ़ायदे हैं। वह लोहार है। नक़्श-ओ-निगारी में कुशल है। बढ़ई है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम ख़त लिखा और उन्होंने उसे मदीना भेजने की आज्ञा दे दी। हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर माहाना सौ दिरहम टैक्स निर्धारित किया। वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और टैक्स ज़्यादा होने की शिकायत की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा : तुम कौन से काम अच्छी तरह कर लेते हो? उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को वे काम बताए जिसमें उसे अच्छी ख़ासी प्रतिभा हासिल थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम्हारे काम की प्रतिभा के हवाले से तो तुम्हारा टैक्स कोई ज़्यादा नहीं है। वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़गी की हालत में वापस चला गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ दिन रुके रहे। एक दिन वही ग़ुलाम आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे बुला कर कहा कि मुझे ख़बर पहुंची है कि तुम हवा से चलने वाली चक्की बहुत अच्छी बना सकते हो। वह ग़ुलाम ग़ुस्से और नापसंदीदगी के आलम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुतवज्जा हुआ और कहा कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए एक ऐसी चक्की बनाऊँगा कि लोग उस का चर्चा करते

रहेंगे। जब वह ग़ुलाम मुड़ा तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथ वाले अस्हाब की तरफ़ मुतवज्जा हुए और कहा इस ग़ुलाम ने मुझे अभी अभी धमकी दी है। कुछ दिन गुज़रे कि अबू-लूलू ने अपनी चादर में दो-धारी वाला ख़ंजर छिपा रखा था जिसका दस्ता उस के बीच में था और उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर वार किया जैसा कि शहादत की घटना में वर्णन हो चुका है। इसका एक वार नाफ़ के नीचे लगा था। अबू-लूलू को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक लिहाज़ से द्वेष और बुग़ज़ भी था क्योंकि अरबों ने उसके इलाक़े को फ़तह कर लिया था और उसे क़ैदी बना लिया था और उस के बादशाह को अपमानित होने की हालत में निर्वासन होने पर मजबूर कर दिया था। वह जब भी किसी छोटे क़ैदी बच्चे को देखता तो उनके पास आकर उनके सिरों पर हाथ फेरता और रो कर कहता कि अरबों ने मेरा जिगर का टुकड़ा खा लिया। जब अबू-लूलू ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करने का पुख़्ता इरादा कर लिया तो उसने बड़े एहतिमाम से दो-धारी ख़ंजर बनाया, उसे तेज़ किया, फिर उसे ज़हर वाला बनाया, फिर इसे लेकर हुरमुज़ान के पास आया और कहा तुम्हारा इस ख़ंजर के बारे में क्या ख़्याल है। उसने कहा मेरा तो ख़्याल है कि तू इस के ज़रीया जिस पर भी वार करेगा उसे क़तल कर देगा। हुरमुज़ान फ़ारसियों के सिपहसालारों में से था। मुस्लमानों ने उसे तुस्तुर के स्थान पर क़ैद कर लिया था और उन्होंने उसे मदीना भेज दिया था। जब उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा तो उसने पूछा उनके मुहाफ़िज़ और दरबान कहाँ हैं? जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम ने बताया कि उनका कोई मुहाफ़िज़ है न दरबान है और न कोई सैक्रेटरी है, न कोई दीवान है तो उसने कहा कि उन्हें तो नबी होना चाहिए। बहरहाल फिर वह मुस्लमान हो गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस के लिए दो हज़ार निर्धारित कर दिए और उसे मदीना में क़ियाम किराया।

तबक़ात इब्ने साद में नाफ़े की सनद से एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह छुरी देखी जिसके ज़रीया से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया था। उन्होंने कहा मैंने पिछले दिनों रोज़ यह छुरी हुरमुज़ान और जुफ़ेना के पास देखी थी तो मैं ने पूछा तुम इस छुरी से क्या करते हो तो इन दोनों ने कहा हम इस के माध्यम से गोश्त काटते हैं क्योंकि हम गोश्त को छूते नहीं। इस पर हज़रत उबैदुल्लह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह छुरी इन दोनों के पास देखी थी? उन्होंने कहा हाँ। अत: हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी तलवार पकड़ी और दोनों के पास आए और उन्हें क़तल कर दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला भेजा। जब वह उनके पास आए तो उन्होंने पूछा आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इन दोनों अफ़राद के क़तल करने पर किस चीज़ ने क्रुद्ध किया जबकि वे दोनों हमारी अमान में हैं। यह सुनते ही हज़रत उबयदुल्लाह ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को पकड़ कर ज़मीन पर गिरा दिया यहाँ तक कि लोग आगे बढ़े और उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उबयदुल्लाह से बचाया। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें बुलवाया था तो उन्होंने अर्थात हज़रत उबयदुल्लाह ने तलवार कवर में डाल ली थी लेकिन हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें सख़्ती के साथ कहा कि उसे उतार दो तो उन्होंने तलवार उतार कर रख दी थी।

सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद कर दिए गए, यह एक रिवायत है जो मैंने पहले वर्णन की। कहाँ तक यह सच्च है, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वाला क़िस्सा कहाँ तक सही है अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन बहरहाल क़तल करने की घटना और जगह भी वर्णन हुई है। हज़रत उमर शहीद कर दिए गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल अबू-लूलू के पास से गुज़रा था जबकि जुफ़ेना और हुरमुज़ान भी उस के साथ थे और वे सरगोशी कर रहे थे। जब मैं अचानक उनके पास पहुंचा तो वे भाग खड़े हुए और एक ख़ंजर उनके मध्य गिर पड़ा। इस के दो फल थे। इस का दस्ता उस के बीच में था। अत: देखो कि जिस ख़ंजर से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया है वह कैसा था? उन्होंने देखा तो वह ख़ंजर बिल्कुल वैसा ही था जैसे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया था।

जब हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह सुना तो तलवार लेकर निकल पड़े यहाँ तक कि हुरमुज़ान को आवाज़ दी। जब वह उनके पास आया तो उसे कहा मेरे साथ चलो यहाँ तक कि हम अपने घोड़े को देखें और ख़ुद इस से पीछे हट गए। जब वह आपके आगे चलने लगा तो उन्होंने इस पर तलवार का वार किया। हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब उसने तलवार की तेज़ी महसूस की तो उसने ला-इलाह इल-लल्लाह पढ़ा। हज़रत उदयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने जुफ़ेना को आवाज़ दी वह हीरा के नसारा में से एक नसरानी था वह साद बिन अबी विक़ास का सहायक था उन्होंने उसे सुलह के लिए मदीना भेजा था जो कि इस के और उनके मध्य हुई थी। वह मदीना में किताबत सिखाता था। जब मैंने उसे तलवार मारी तो उसने अपनी आँखों के सामने सलीब का निशान बनाया। फिर हज़रत उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो आगे बढ़े और अबू-लूलू की बेटी को क़तल कर दिया जो मुस्लमान होने का दावा करती थी। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो का इरादा था कि आज वह मदीना में किसी क़ैदी को ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। मुहाजिरीन उनके ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए और उन्हें रोका और उन्हें धमकी दी तो उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं उन्हें ज़रूर क़तल करूँगा। और वह मुहाजिरीन को भी ख़ातर में न लाए यहाँ तक कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो उनके के साथ मुसलसल बातचीत में लगे रहे यहाँ तक कि उन्होंने तलवार हज़रत अम्र बिन आसु रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले कर दी। फिर हज़रत साद बिन अबी विकास रज़ियल्लाहु अन्हो उनके पास आए तो इन दोनों ने एक दूसरे की पेशानी के बाल पकड़ लिए। उद्देश्य आपने हुरमुज़ान, जुफ़ेना और अबू-लूलू की बेटी को क़तल कर दिया।

अब समस्त विषय इस बेहस में वर्णन किए जा चुका है कि किस ने अबू-लूलू को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल करने पर उकसाया था और लिखने वाले यह लिखते हैं कि जो रिवायत हम तक पहुंची हैं वह इस बात पर दलालत करती हैं और जो इस हक़ में हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़तल एक साज़िश थी। हुरमुज़ान ने यह सारी मंसूबा बंदी की थी कि उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ अबू-लूलू के द्वेष और बुग़ज़ को मज़ीद भड़काया। वे दोनों अजमी थे फिर यह कि जब हुरमुज़ान को क़ैद कर लिया गया और उसे मदीना भेज दिया गया तो उसने इस अनुमान के अंतर्गत इस्लाम क़बूल कर लिया कि ख़लीफ़ा उसे क़तल कर देंगे।

तबक़ात इब्ने साअद में नाफ़े की रिवायत में वर्णित है कि अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह छुरी देखी थी जिसके साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया था और सईद बिन मुसय्यिब की रिवायत तिब्री में वर्णित है कि अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह ख़ंजर देखा था जो अबू-लूलू, जुफ़ेना और हुरमुज़ान के मध्य गिर गया था। जब वह अचानक उनके पास आए थे तो वह उनके चलने की वजह से गिर गया था। जब हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह बात सुनी तो वह तुरन्त गए और उन दोनों को क़तल कर दिया और उन्होंने उसी पर इकतिफ़ा नहीं किया बल्कि उन्होंने इंतिक़ाम की भावना से मग़लूब हो कर अबू-लूलू की बेटी को भी क़तल कर दिया। वह ख़ंजर जिसके सम्बन्ध में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया था वह बिल्कुल वही था जिसके माध्यम से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया था। यदि हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुरमुज़ान और जुफ़ेना को क़तल करने में जल्दी न करते तो इस बात की सम्भावना थी कि इन दोनों को मुआमला की तहक़ीक़ के लिए बुलाया जाता और इस तरह यह साज़िश प्रकट हो जाती। यदि इन सब चीज़ों को सामने रखा जाए तो यह बात रोज़-ए-रौशन की तरह समझी जा सकती है कि यह एक सोची समझी साज़िश थी और जिसने इस साज़िश को अमली जामा पहनाया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल किया वह अबू-लूलू था। यह साज़िश के हक़ में कहने वाले कहते हैं। (उद्धरित सीरत उमर फ़ारूक़ अज़ मोहम्मद रज़ा : अनुवादक मुहम्मद सरवर गौहर साहिब, पृष्ठ 340 से 344)

इसी तरह एक और जीवनी लेखक डाक्टर मुहम्मद हुसैन हैकल अपनी किताब में लिखते हैं कि घटना यह है कि जब मुस्लमान ईरानियों और ईसाईयों पर ग़ालिब आए थे और जब से उन मुल्कों की समस्त हुकूमत उन्होंने संभाली थी और शहनशाह-ए-ईरान को इबरतनाक शिकस्त देकर भागने पर मजबूर किया था उस वक़्त से ईरानी, यहूदी और ईसाई अपने दिलों में अरबों के ख़िलाफ़ साधारणता और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ विशेषता दुश्मनी और द्वेष की भावनात छुपाए बैठे थे। उस वक़्त लोगों ने अपनी बात चीत में इस कीना और बुग़ज़ का वर्णन भी किया था और उन्हें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वह बात भी याद आई थी जो उन्होंने यह ज्ञात करने के बाद कि उन पर हमला करने वाला अबू-लूलू एक

ईरानी है कही थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था। मैं तुमको मना करता था कि हमारे पास किसी बेदीन को घसीट कर नहीं लाना लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। मदीना में इन अजमी बे दीनों की कीना-ओ-बुग़ज़ संख्यां संक्षिप्त सी थी लेकिन एक जमाअत थी जिनके दिल ग़ज़ब और इंतिक़ाम से भरे हुए और जिनके सीने दुश्मनी और द्वेष की आग से दहक रहे थे और कौन जाने, हो सकता है उन लोगों ने साज़िश की हो और अबू-लूलू का यह कार्य इसी साज़िश का परिणाम हो जिसका जाल इन इस्लाम के दुश्मनों ने अपनी द्वेष और दुश्मनी की प्यास बुझाने के लिए बना था और जिसके सम्बन्ध में वे समझ रहे थे कि इस तरह अरबों के इत्तिहाद को टुकड़े टुकड़े कर के मुस्लमानों के बाज़ू कमज़ोर किए जा सकते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्रों को हक़ीक़त-ए-हाल से बाख़बर होने की सबसे ज़्यादा बेचैनी थी। वे इस राज़ से पर्दा उठाकर उस के अंत तक पहुंच सकते थे यदि अबू-लूलू फ़िरोज़ ख़ुदकुशी नहीं करता। लेकिन उसने आत्महत्या करली और इस राज़ को अपने साथ क़ब्र में ले गया तो क्या बात ख़त्म हो गई और अब इस राज़ को पाने की कोई मार्ग नहीं रहा? यह लिखने वाला इतिहासकार लिखता है जो इस साज़िश को बे-नक़ाब करने के हक़ में है कि यह साज़िश थी कि नहीं? बल्कि कारकुनान क़ज़ा-ओ-क़दर ने चाहा कि अरब का एक सरदार इस राज़ से अवगत हो जाए और इस साज़िश की तरफ़ रहनुमाई करे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने जब वह छुरी देखी जिससे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया था फ़रमाया: मैं ने यह छुरी कल हुरमुज़ान और जुफ़ेना के पास देखी थी। मैंने उनसे पूछा तुम इस छुरी से क्या करोगे? वह बोले कि गोश्त काटेंगे क्योंकि हम गोश्त को हाथ नहीं लगाते और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल अबू-लूलू के पास से गुज़रा। जुफ़ेना और हुरमुज़ान उस के साथ थे और वह आपस में चुपके चुपके बातें कर रहे थे। मैं तुरंत उनके पास पहुंचा तो वे भागे और एक ख़ंजर उनके मध्य गिर पड़ा जिसके दो फल थे और दस्ता बीच में था। देखो वह ख़ंजर कैसा है जिससे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया है? लोगों ने देखा तो वाक़ई वही ख़ंजर था जो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बिक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया था। फिर तो इस मुआमले में कोई संदेह बाक़ी नहीं रहता। यह लिखने वाला कहता है कि दोनों के दोनों सच्चे गवाह हैं बल्कि मुस्लमानों में सबसे ज़्यादा एतबार के योग्य हैं और गवाही दे रहे हैं कि जिस छुरी से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया वह हुरमुज़ान और जुफ़ेना के पास थी। उनमें से एक गवाह का कहना है कि उसने क़ातिल अबू-लूलू को क़तल करने से पहले दोनों से साज़िश करते देखा है और दोनों गवाहों के वर्णन के अनुसार यह सब कुछ उस रात का क़िस्सा है जिस सुबह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया गया। क्या उस के बाद भी कोई व्यक्ति इस में संदेह कर सकता है कि अमीरुल मौमेनीन इस साज़िश का शिकार हुए जिसके अहम किरदार तो यही तीन आदमी थे लेकिन यह भी हो सकता है कि दूसरे ईरानी या उन क़ौमों के लोग भी इस में शामिल हों जिन पर मुस्लमानों ने ग़लबा पाया था।

हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो की बात और अब्दुर्रहमान बिन अबी बिक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत सुनी तो सारी कायनात उनकी निगाहों में ख़ून ही ख़ून हो गई। उनके दिल में यह बात बैठ गई कि मदीना के समस्त परदेसी इस साज़िश में शामिल हैं और उन सब के हाथों से जुर्म का ख़ून टपक रहा है। उन्होंने तुरन्त तलवार संभाली और सबसे पहले हुरमुज़ान और जुफ़ेना का काम ख़त्म किया। रिवायत है कि उन्होंने हुरमुज़ान को आवाज़ दी और जब वह बाहर निकल कर आया तो उसे कहा कि ज़रा साथ आओ और मेरे घोड़े को देख लो और ख़ुद पीछे हट गए। जब वह उनके सामने से गुज़रा तो तलवार का एक हाथ उस पर मारा। ईरानी ने जब तलवार की सोज़िश महसूस की तो कहा ला-इलाह इल-लल्लाह और वहीं ढेर हो गया। रिवायत है कि हज़रत उबयदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे थे ने कहा कि फिर मैंने जुफ़ेना को बुलाया वह हिरा का एक ईसाई था और साद बिन अबी विक़ास का दूध वाला भाई था। इस रिश्ते से साद उसे मदीना ले आए थे जहां वो लोगों को पढ़ाया लिखाया करता था। जब मैंने उसे तलवार मारी तो उसने अपनी दोनों आँखों के मध्य सलीब का निशान बनाया। हज़रत अब्दुल्लाह के दूसरे भाई भी अपने पिता की शहादत पर उनसे कुछ कम ग़ज़बनाक नहीं थे और सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा उम्मुल मोमनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को था।

बहरहाल यह जो उन्होंने किया है क़ानूनी तौर पर इस की कोई आज्ञा नहीं थी। किसी व्यक्ति को इख़तियार नहीं कि वह स्वयं इंतिक़ाम लेने के लिए खड़ा हो जाए या अपना हक़ ख़ुद वसूल करे जबकि विषयों का फ़ैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खुल्फ़ा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम के लिए विशेष था। वे लोगों के मध्य मुंसिफ़ाना फ़ैसले और अपराधी के ख़िलाफ़ बदले का हुक्म सादर करते थे। इसलिए हज़रत उदयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो का कर्तव्य था कि जब उन्हें इस साज़िश का इलम हुआ जिसके परिणाम में उनके पिता की जान गई तो इस का फ़ैसला अमीरुल मौमेनीन से चाहते। यदि उनके नज़दीक साज़िश साबित हो जाती तो वह क़िसास का हुक्म-जारी फ़र्मा देते और यदि साबित नहीं होती या उस के सम्बन्ध में अमीर अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो, नए ख़लीफ़ा के दिल में कोई संदेह पैदा हो जाता तो वह संदेह की हद तक सज़ा में तख़फ़ीफ़ कर देते या यह फ़ैसला दे देते कि अकेला अबू-लूलू मुजरिम है। (उद्धरित अल फ़ारूक़ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक : हबीब अशअर पृष्ठ 869 से 872 इस्लामी कुतुब ख़ाना उर्दू बाज़ार लाहौर) बहरहाल जो उन्होंने किया क़ानूनी तौर पर वह उनका हक़ नहीं बनता था।

संक्षिप्त यह कि यह संभावना से दूर नहीं कि यह क़तल एक बाक़ायदा साज़िश हो लेकिन इस वक़्त के हालात का तक़ाज़ा हो कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ौरी तौर पर इस में तहक़ीक़ नहीं करवा सके हों या जो भी हालात हों आरंभिक इतिहासकार उस के सम्बन्ध में ख़ामोश हैं और इस ज़माने के कुछ इतिहासकार क़रायन की रोशनी में इस पर बेहस कर रहे हैं और उनके दलायल में कुछ वज़न ज्ञात होता है क्योंकि यह साज़िशी गिरोह यहीं रुकता नहीं बल्कि फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु भी इसी तरह की एक साज़िश का शिकार होते हैं और इस से इस संदेह को मज़ीद तक़वियत मिलती है कि इस्लाम की बढ़ती हुई तरक़्क़ी और ग़लबा को रोकने के लिए और अपने इंतिक़ाम की आग को ठंडा करने के लिए बैरूनी अनासिर की एक साज़िश के तहत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया था। वल्लाहो आलम।

सही मुस्लिम में वर्णित है कि हज़रत इब्ने उमर रिवायत करते हैं कि जब मेरे पिता पर हमला हुआ तो मैं उनके पास मौजूद था। लोगों ने उनकी प्रशंसा की और कहा جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا अल्लाह तआला आपको बेहतरीन बदला दे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : मैं रग़बत रखने वाला भी हूँ और डरने वाला भी हूँ। लोगों ने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : क्या मैं तुम्हारा बोझ ज़िंदगी में भी और मरने के बाद भी उठाऊं? मैं चाहता हूँ कि इस में मेरा हिस्सा बराबर का हो। अर्थात न मुझ पर कोई गिरिफ़्त हो न मुझे कुछ मिले। यदि मैं किसी को जांनशीन बनाऊँ तो उन्होंने भी जांनशीन बनाया जो मुझसे बेहतर थे अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। बना दूं तो कोई हर्ज नहीं है। यदि मैं तुम्हें बग़ैर जांनशीन निर्धारित करने के छोड़ जाऊं तो वह तुम्हें बग़ैर जांनशीन निर्धारित करने के छोड़ गए थे जो मुझसे बेहतर थे अर्थात दूसरी मिसाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे जिन्हों ने जांनशीन निर्धारित नहीं किया था। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन किया तो मैं जान गया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु जानशीन निर्धारित नहीं करेंगे।

(सही मुस्लिम, किताब अल्इमारा, बाब इस्तख़्लाफ़ व तरका, हदीस 4713)

सही मुस्लिम की एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है। वह कहते हैं कि मैं हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया। उन्होंने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता जांनशीन निर्धारित करने वाले नहीं। वह कहते हैं मैंने कहा कि वह ऐसा नहीं करेंगे। उन्होंने अर्थात हज़रत

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।”

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया वह ऐसा करेंगे। वह कहते हैं मैंने क़सम खाई कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पुन: बात करूँगा। कहते हैं मैं सुबह तक ख़ामोश रहा और आपसे कोई बात नहीं की। वह कहते हैं कि मेरा हाल यह था कि मानों मैं अपनी कसम की वजह से पहाड़ उठाने वाला हूँ। मैं लौटा और उनके पास गया। उन्होंने मुझसे लोगों का हाल दरयाफ़त किया अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने और मैंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि वह कहते हैं। फिर मैंने जो वह लोग कहते हैं वह बातें बताईं। फिर मैंने आपसे कहा कि मैंने लोगों को एक बात कहते हुए सुना है और मैंने क़सम खाई है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से वह बात ज़रूर कहूँगा। उनका, लोगों का ख़्याल है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु जांनशीन निर्धारित नहीं करेंगे। बात यह है कि यदि कोई आपके ऊंटों को चराने वाला हो या बकरियों का चरवाहा हो फिर वह आपके पास आए और उन्हें छोड़ दे तो आप देखेंगे कि उसने उनको ज़ाए कर दिया। अत: लोगों की निगहबानी तो ज़्यादा ज़रूरी है। कहते हैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी बात से इत्तिफ़ाक़ किया और कुछ देर के लिए अपना सिर झुकाया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिर उठाया और मेरी तरफ़ तवज्जा की और फ़रमाया : अल्लाह अपने दीन की हिफ़ाज़त करेगा। यदि मैं किसी को ख़लीफ़ा ना बनाऊँ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़लीफ़ा तो नहीं बनाया था और यदि मैं ख़लीफ़ा बनाऊँ तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा बनाया था। उन्होंने अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे इब्ने उमर से कहा : अत: अल्लाह की क़सम जब उन्होंने अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन किया तो मैं समझ गया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु कसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बराबर नहीं करेंगे और यह कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु कसी को जांनशीन नहीं बनाएंगे। (सही मुस्लिम, किताब अल् इमारा, बाब अल् इस्तख्लाफ़ व् तरका हदीस 4714)

हज़रत मिसवर बिन मखरमा वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को घायल किया गया तो दर्द से बेचैन होने लगे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा जैसा कि उनको तसल्ली देने लगे हैं। अमीरुल मौमेनीन यदि ऐसा है तो आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत में रह चुके हैं और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने निहायत उम्दगी से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का साथ दिया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी हालत में जुदा हुए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुश थे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ रहे और निहायत उम्दगी से उनका साथ दिया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी हालत में जुदा हुए कि वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुश थे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सहाबा के साथ रहे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने निहायत उम्दगी से उनका साथ दिया और यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से जुदा हो गए तो निसदेह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसी हालत में उनसे जुदा होंगे कि वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुश हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह जो तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुशनूदी का वर्णन किया है तो यह केवल अल्लाह तआला का एहसान है जो उसने मुझ पर किया। और जो तुमने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की सोहबत और उनकी ख़ुशनूदी का वर्णन किया है तो ये भी केवल अल्लाह का एहसान है जो उस ने मुझ पर किया। और यह जो तुम मेरी फ़िक्र देख रहे हो तो यह तुम्हारी ख़ातिर और तुम्हारे साथियों के ख़ातिर है। मैं अपनी फ़िक्र नहीं कर रहा। तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की फ़िक्र कर रहा हूँ। अल्लाह की क़सम यदि मेरे पास ज़मीन भर सोना भी हो तो मैं ज़रूर अल्लाह के अज़ाब से फ़िद्या देकर छुड़ा लेता पेशतर इस के कि मैं वह अज़ाब देखूं।

(उद्धरित सही अल् बुखारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), बाब मनाक़िब उमर बिन ख़त्ताब हदीस 3692)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो आयत وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا ؕ की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं "खुल्फ़ा पर कोई ऐसी मुसीबत नहीं आई जिससे उन्होंने भय खाया हो और यदि आई तो अल्लाह तआला ने उसे अमन से बदल दिया। इस में कोई संदेह नहीं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए परन्तु जब घटनाओं को देखा जाता है तो ज्ञात होता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस शहादत से कोई ख़ौफ़ नहीं था बल्कि वह नियमित दुआएं किया करते थे कि अल्लाह! मुझे शहादत नसीब कर और शहीद भी मुझे मदीना में कर। अत: वह व्यक्ति जिसने अपनी सारी आयु यह दुआएं करते हुए गुज़ार दी हो कि या अल्लाह मुझे मदीना में शहादत दे। वह यदि शहीद हो जाए तो हम यह किस तरह कह सकते हैं कि इस पर एक ख़ौफ़नाक वक़्त आया परन्तु वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से अमन से नहीं बदला गया। बेशक यदि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शहादत से डरते और फिर वह शहीद हो जाते तो कहा जा सकता था कि उनके ख़ौफ़ को ख़ुदा तआला ने अमन से नहीं बदला परन्तु वह तो दुआएं करते रहते थे कि या अल्लाह मुझे मदीना में शहादत दे। अत: उनकी शहादत से यह क्योंकर साबित हो गया कि वह शहादत से डरते भी थे और जब वह शहादत से नहीं डरते थे बल्कि उस के लिए दुआएं करते थे जिन को ख़ुदा तआला ने क़बूल फ़र्मा लिया तो ज्ञात हुआ कि इस आयत के अधीन उन पर कोई ऐसा ख़ौफ़ नहीं आया जो उनके दिल ने महसूस किया हो और इस आयत में जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ यही वर्णन है कि खुल्फ़ा जिस बात से डरते होंगे वह कभी वक़ूअ पज़ीर नहीं हो सकती और अल्लाह तआला का वादा है कि वह उनके ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा परन्तु जब वह एक बात से डरते ही न हों बल्कि अपनी इज़्ज़त और बुलंदी दर्जात का मूजिब समझते हूँ तो उसे ख़ौफ़ कहना और फिर यह कहना कि उसे अमन से क्यों नहीं बदल दिया गया बिना अर्थ वाली बात है।" यह नुक्ता भी समझने वाला है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "मैंने तो जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस दुआ को पढ़ा तो मैंने अपने दिल में कहा कि इस का बज़ाहिर यह अर्थ था कि दुश्मन मदीना पर हमला करे और इस का हमला इतनी शिद्दत से हो कि समस्त मुस्लमान तबाह हो जाएं। फिर वह ख़लीफ़-ए-वक़्त तक पहुंचे और उसे भी शहीद कर दे। परन्तु अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ भी क़बूल कर ली और ऐसे सामान भी पैदा कर दिए जिनसे इस्लाम की इज़्ज़त क़ायम रही। इसलिए अतिरिक्त इस के कि मदीना पर कोई बैरूनी लश्कर हमला-आवर होता अंदर से ही एक ख़बीस उठा और उसने ख़ंजर से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया।" (तफ़सीरे कबीर, भाग 6 पृष्ठ 378)

ग़ुलामों की आज़ादी के हवाले से इस्लामी तालीम वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना को लेकर लिखा है और इस का कारण वर्णन किया है। फ़रमाया कि "पहले तो यह हुक्म दिया कि तुम एहसान कर के बग़ैर किसी बदले के ही उनको रिहा कर दो" अर्थात ग़ुलामों को बग़ैर किसी बदले के रिहा कर दो।" फिर यह कहा कि यदि ऐसा नहीं कर सकते तो तावान वसूल कर के आज़ाद कर दो और यदि कोई व्यक्ति ऐसा रह जाए। कोई ग़ुलाम" जो स्वयं तावान अदा करने की ताक़त नहीं रखता हो उसकी हुकूमत भी इस के मुआमला में कोई दिलचस्पी' और जहां से वह आया है जिस हुकूमत का वह फ़र्द है उस को आज़ाद कराने में उस की हुकूमत भी "कोई दिलचस्पी नहीं लेती हो और उस के रिश्तेदार भी लापरवाह हूँ तो वह तुमको नोटिस देकर अपनी तावान की किस्तें निर्धारित करवा सकता है।' फिर वह ख़ुद क़ैदी जो है वह अपनी तावान की किस्तें निर्धारित करवा सकता है।" ऐसी सूरत में जहां तक उस की कमाई का सम्बन्ध है क़िस्त छोड़कर सब उसी की होगी और वह अमलन पूरे तौर पर आज़ाद होगा।" अर्थात जितनी कमाई वह करेगा इस में से वह क़िस्त अदा करेगा जो उस ने आज़ादी के लिए रखी है और बाक़ी आमद उस की अपनी है और यह एक तरह की आज़ादी है।

"हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को एक ऐसे ग़ुलाम ने ही मारा था जिसने मुकातबत की हुई थी। वह ग़ुलाम जिस मुस्लमान के पास रहता था उनसे एक दिन उसने कहा कि मेरी इतनी हैसियत है, आप मुझ पर तावान डाल दें। मैं प्रतिमाह किस्तों के माध्यम से आहिस्ता-आहिस्ता समस्त तावान अदा करदूंगा। उन्होंने एक मामूली सी क़िस्त निर्धारित कर दी और वह अदा करता रहा। एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास उसने शिकायत की कि मेरे मालिक ने मुझ पर भारी क़िस्त

निर्धारित कर रखी है आप रज़ियल्लाहु अन्हु उसे कम करा दें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की आमदन की तहक़ीक़ की तो ज्ञात हुआ कि जितनी आमद के ढंगा पर क़िस्त निर्धारित हुई थी इस से कई गुना ज़्यादा आमद वह पैदा करता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह देखकर फ़रमाया कि इस क़दर आमद के मुक़ाबला मैं तुम्हारी क़िस्त बहुत मामूली है उसे कम नहीं किया जा सकता। इस फ़ैसला से उसे सख़्त ग़ुस्सा आया और उसने समझा कि मैं चूँकि ईरानी हूँ इस लिए मेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला किया गया है और मेरे मालिक का अरब होने की वजह से लिहाज़ किया गया है। इसलिए इस ग़ुस्सा में उसने दूसरे ही दिन ख़ंजर से आप पर हमला कर दिया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु इन्ही ज़ख़्मों के परिणाम में शहीद गए।''

(इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम, भाग 18, पृष्ठ 28-29)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मज़ीद वर्णन करते हैं कि "दुनिया में दो ही चीज़ें मार्ग से फेरने का मूजिब होती हैं या तो अत्यधिक द्वेष या फिर इंतिहाई प्रेम। इंतिहाई बुग़ज़ कभी कबार मामूली घटना से पैदा हो जाता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त देखो कितने मामूली घटना से बुग़ज़ बढ़ा जिस ने समस्त मुसलमानों को कितना बड़ा नुक़्सान पहुंचाया है। मैं समझता हूँ इस घटना का असर अब तक चलता जा रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त एक मुक़द्दमा आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। किसी व्यक्ति का ग़ुलाम कमाता बहुत था लेकिन मालिक को देता कम था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ग़ुलाम को बुलाया और उसे कहा कि मालिक को ज़्यादा दिया करो। उस वक़्त चूँकि व्यवसाय वाले कम होते थे इस लिए लोहारों और लकड़ी का काम करने वालों की बड़ी क़दर होती थी। वह ग़ुलाम आटा पीसने की चक्की बनाया करता था और इस तरह काफ़ी कमाता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने साढ़े तीन आने उसके ज़िम्मा लगा दीए कि मालिक को अदा किया करे। यह कितनी थोड़ी रक़म है परन्तु उस का ख़्याल था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़लत फ़ैसला किया है इस पर उसके दिल में बुग़ज़ बढ़ना शुरू हुआ। एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे कहा कि हमें भी चक्की बना दो। इस पर कहने लगा ऐसी चुकी बना दूँगा जो ख़ूब चलेगी। यह सुनकर किसी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा आपको धमकी दी है।'' यह पहली जो घटना है इस से लगता है कि इसी से मिलती-जुलती है या वही घटना है और इसी की घटना है। बहरहाल है उसी ग़ुलाम का।'' आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा शब्दों से तो यह बात ज़ाहिर नहीं होती।" पहली रिवायत में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद कहा था कि यह धमकी दे रहा है।'' उसने कहा लहजा धमकी वाला था। अंतत: एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ रहे थे कि इस ग़ुलाम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ंजर मार कर क़तल कर दिया।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि'' वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो करोड़ों इन्सानों का बादशाह था, जो बहुत वसीअ देशों का हुकमरान था, जो मुस्लमानों का बेहतरीन मार्गदर्शक था साढ़े तीन आने पर मार दिया गया परन्तु बात यह है कि जिनकी तबीयत में बुग़ज़ और कीना होता है वह साढ़े तीन आने या दो आने नहीं देखते वह अपनी प्यास बुझाना चाहते हैं। उनकी तबीयत द्वेष के लिए वक़्फ़ होती है। ऐसी हालत में वह नहीं देखते कि हमारे लिए और दूसरों के लिए किया परिणाम होगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल से जब दरयाफ़त किया गया कि तू ने यह पाप क्यों किया तो उसने कहा उन्होंने मेरे ख़िलाफ़ फ़ैसला किया था मैं ने उस का बदला लिया है।"

पहले यह विस्तार से इस तरह वर्णन नहीं हुआ। हो सकता है कि इस वक़्त उस को पकड़ते हुए थोड़ा सा वक़्त मिला हो तो इस में उसने यह कह दिया हो कि मैंने यह क़तल इस लिए किया है और फिर ख़ुदकुशी भी कर ली। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि "मैंने इस दर्दनाक घटना का वर्णन करते हुए कहा है इस का इस्लाम पर आज तक असर है और वह इस तरह कि जबकि मौत हर वक़्त लगी होती है परन्तु ऐसे वक़्त में मौत के आने का ख़्याल नहीं किया जाता जब अंग मज़बूत हों लेकिन जब अंग कमज़ोर हों और सेहत गिरावट की तरफ़ हो तो लोगों के ज़हन ख़ुद बख़ुद आइन्दा इंतिज़ाम के सम्बन्ध में सोचना शुरू कर देते हैं। वह एक दूसरे से इस बारे में बातें नहीं करते परन्तु ख़ुद बख़ुद प्रचलन ऐसा पैदा हो जाता है जो आइन्दा इंतिज़ाम के सम्बन्ध में ग़ौर करने की तहरीक करता है। इस वजह से जब इमाम फ़ौत हो तो लोग चौकस होते हैं। चूँकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ुवा मज़बूत थे जबकि उनकी उमर तरेसठ वर्ष की हो चुकी थी लेकिन सहाबा के ज़हन में यह नहीं था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे जल्दी जुदा हो जाऐंगे इस वजह से वह आइन्दा इंतिज़ाम के सम्बन्ध में बिल्कुल बे-ख़बर थे कि यकदम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की मुसीबत आ पड़ी। इस वक़्त जमाअत किसी दूसरे इमाम को क़बूल करने के लिए तैयार नहीं थी। इस तैयारी न करने का परिणाम यह हुआ कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से लोगों को वह लगाओ नहीं पैदा हुआ जो होना चाहीए था। इस वजह से इस्लाम की हालत बहुत नाज़ुक हो गई और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के वक़्त और ज़्यादा नाज़ुक हो गई।" (ख़ुत्बाते महमूद, भाग 11, पृष्ठ 240-241)

जो फ़साद बाद में हुए यह भी उनकी एक वजह वर्णन की है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक यह वजह हो सकती है।

उपद्रव के वक़्त कुछ आदमी नमाज़ के अवसर पर हिफ़ाज़त के लिए खड़े होने ज़रूरी हैं। यह भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है। और इस विषय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की घटना वर्णन की है। फ़रमाते हैं कि'' क़ुरआन-ए-मजीद का स्पष्ट हुक्म है कि हिफ़ाज़त के लिए मुस्लमानों में से आधे खड़े रहा करें और जबकि यह जंग के वक़्त की बात है जब एक जमाअत की हिफ़ाज़त के लिए ज़रूरत होती है लेकिन इस से इस्तिदलाल किया जा सकता है कि छोटे फ़ित्ने के इंसिदाद के लिए यदि कुछ आदमी नमाज़ के वक़्त खड़े कर दीए जाएं तो यह आरोप के योग्य बात नहीं बल्कि ज़रूरी होगा' कि यह किस तरह किया जाये? फ़रमाते हैं कि "यदि जंग के वक़्त हज़ार में से पाँच सौ हिफ़ाज़त के लिए खड़े किए जा सकते हैं तो क्या मामूली ख़तरे के वक़्त हज़ार में से पाँच दस आदमी हिफ़ाज़त के लिए खड़े नहीं किए जा सकते? यह कहना की ख़तरा ग़ैर यक़ीनी है बेहूदा बात है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ क्या हुआ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ रहे थे। मुस्लमान भी नमाज़ में व्यस्त थे कि एक बदमाश व्यक्ति ने समझा यह वक़्त हमला करने के लिए उचित है वह आगे बढ़ा और उसने ख़ंजर से वार कर दिया। इस घटना के बाद भी यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि नमाज़ के वक़्त पहरा देना उस के उसूल या वक़ार के ख़िलाफ़ है।'' अर्थात नमाज़ के उसूल या वक़ार के ख़िलाफ़ है'' तो अतिरिक्त अपनी बेवक़ूफ़ी के प्रदर्शन करने के और वह कुछ नहीं करता। इस की मिसाल उस बेवक़ूफ़ की तरह है जो लड़ाई में शामिल हुआ और एक तीर उसे आ लगा जिससे ख़ून बहने लगा। वह मैदान से भागा और ख़ून साफ़ करता हुआ यह कहता चला गया कि अल्लाह! यह स्वप्न ही हो" यह सच्ची बात नहीं हो कि तीर मुझे लग गया है'' ...तारीख़ से यह भी साबित है कि एक अवसर पर सहाबा ने अपनी हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम नहीं किया तो उन्हें सख़्त तकलीफ़ उठानी पड़ी। इसलिए हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो जब मिस्र की फ़तह के लिए गए और उन्होंने इलाक़ा को फ़तह कर लिया तो उस के बाद जब वह नमाज़ पढ़ाते तो पहरा का इंतिज़ाम नहीं करते। दुश्मनों ने जब देखा कि मुस्लमान इस हालत में बिल्कुल ग़ाफ़िल होते हैं तो उन्होंने एक दिन निर्धारित करके कुछ सौ हथयारों के साथ आदमी ऐन उस वक़्त भेजे। जब मुस्लमान सजदे में थे पहुंचते ही उन्होंने तलवारों से मुस्लमानों के सिर काटने शुरू कर दीए। तारीख़ से साबित है कि सैंकड़ों सहाबा उस दिन मारे गए या घायल हुए। एक के बाद दूसरा सरज़मीन पर गिरता और दूसरे के बाद तीसरा और साथी समझ ही नहीं सकते कि यह क्या हो रहा है यहाँ तक कि शदीद नुक़्सान लश्कर को पहुंच गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जब ज्ञात हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें बहुत डाँटा और फ़रमाया कि क्या तुम्हें ज्ञात नहीं था कि हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम रखना चाहीए परन्तु उन्हें" अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को "क्या ज्ञात था कि मदीना में भी ऐसा ही उनके साथ होने वाला है। इस घटना के बाद सहाबा ने यह इंतिज़ाम किया कि जब भी नमाज़ पढ़ते हमेशा हिफ़ाज़त के लिए पहरे रखते।"

(ख़ुत्बाते महमूद, भाग 16, पृष्ठ 68-69)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़र्ज़ के बारे में पहले भी वर्णन हो चुका है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा था और फिर अपने बेटे को फ़रमाया था। इस बारे में मज़ीद यह है कि उन्होंने अपने बेटे को कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु देखो मुझ पर कितना क़र्ज़ है? उन्होंने हिसाब किया तो छयासी हज़ार दिरहम निकले। फ़रमाया: हे अब्दुल्लाह यदि ऑले उमर का माल उस के लिए काफ़ी हो तो उनके माल से मेरा यह क़र्ज़ अदा कर देना। यदि उनका माल काफ़ी न हो तो बनू अदी बिन काब से माँगना। यदि वह भी काफ़ी नहीं हो तो क़ुरैश से माँगना और उनके अतिरिक्त किसी और से नहीं कहना।

(अत्तबक़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 257 दारुल क़ुतुब इल्मिया)

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो जानते थे कि हमारा यह सादा ज़िंदगी बसर करने वाला इमाम इतनी बड़ी रक़म अपने ऊपर ख़र्च करने वाला नहीं है। उन्हें ज्ञात था कि जो इतना क़र्ज़ चढ़ाया था, यह रक़म भी उन्होंने ज़रूरतमंदों और ग़रीबों पर ही ख़र्च की थी। इसलिए अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल माल से क़र्ज़ लेकर अपना यह क़र्ज़ क्यों नहीं अदा कर देते? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया केवल अल्लाह के लिए ! क्या तुम चाहते हो कि तुम और तुम्हारे साथी मेरे बाद यह कहें कि हमने तो अपना हिस्सा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए छोड़ दिया। तुम अब तो मुझे तसल्ली दे दो परन्तु मेरे पीछे ऐसी मुसीबत पड़ जाए कि इस से निकले बग़ैर मेरे लिए नजात की कोई राह न हो। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया। मेरे क़र्ज़ की ज़िम्मेदारी क़बूल करो। इसलिए उन्होंने यह ज़िम्मेदारी क़बूल कर ली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अभी दफ़न नहीं किए गए थे कि उनके बेटे ने अरकान-ए-शूरा और कुछ नसारा को अपनी इस ज़मानत पर गवाह बनाया जो क़र्ज़ की ज़िम्मेदारी ली थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तदफ़ीन के बाद अभी जुम्आ नहीं गुज़रा था कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़र्ज़ की रक़म लेकर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में पहुंचे और कुछ गवाहों के सामने इस बार से सबकदोश हो गए। (अत्तबक़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 273 दारुल क़ुतुब इल्मिया)

क़र्ज़ की अदायगी के सम्बन्ध में एक और रिवायत किताब "वफ़ाउल वफ़ा" में मिलती है। हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़िम्मा क़र्ज़ था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा मेरे ज़िम्मा अल्लाह के माल में से कुछ क़र्ज़ है और मैं चाहता हूँ कि मैं अल्लाह को इस हाल में मिलों कि मेरे ज़िम्मा कोई क़र्ज़ न हो। अत: तुम इस क़र्ज़ को पूरा करने के लिए इस मकान को बेच देना जिसमें रहते थे। अत: यदि कुछ माल कम रह जाए तो बनू अदी से माँगना। यदि फिर भी बच जाए तो क़ुरैश के बाद किसी के पास नहीं जाना। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने, हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का घर ख़रीद लिया जिसको दारुल क़ज़ा कहा जाता है। आपने वह मकान बेच दिया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़र्ज़ अदा कर दिया। इसलिए इस घर को दारुल क़ज़ा और देयने उमर कहा जाने लगा अर्थात वह घर जिसके माध्यम से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़र्ज़ को अदा किया गया था।

(वफ़ाउल वफ़ा बा-ख़बार दारुल मुस्तफ़ा अज़ अल्लामा नूरुद्दीन, भाग 1 भाग सानी, पृष्ठ 222 मकतब अलहकानिया, मुहल्ला जंगी पेशावर पाकिस्तान) यह वर्णन अभी मज़ीद चल रहा है इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra, Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 1 का शेष

दुनिया में क़ायम करो। अगर जिन्न ईमान लाए थे तो वे किस रूप में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद करते थे। कहते हैं कि जिन लोगों के सिरों पर चढ़ जाते हैं और विभिन्न प्रकार के फल लाकर देते हैं ये कैसे मोमिन थे कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ज़ुल्म पर ज़ुल्म टूटा लेकिन काफ़िर जिन्नों ने तो हज़रत सुलैमान के लिए क़िले तैयार किए और हर ज़लील से ज़लील काम उनके लिए किया, ये मोमिन ऐसे तोता चश्म थे कि अबुजहल इत्यादि किसी को उन्होंने सज़ा न दी और फिर ये जिन लोगों को तो बे-मौसम के फल लाकर दे देते थे, मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाकर उन्हें यह तौफ़ीक़ भी न मिली कि जब ग़ज़वा ख़ंदक़ के अवसर पर आप पर और दूसरे मुस्लमानों पर फ़ाक़े पर फ़ाक़े आ रहे थे और आप और आप के सहाबा रज़ि मानो पेटों पर पत्थर बाँधे फिर रहे थे ये लोग आप के लिए और आप के सहाबा के लिए जो की रोटियाँ ही ला देते। यह तो ईमान की निशानी नहीं बल्कि अव्वल दर्जा की शत्रुता की निशानी है लेकिन क़ुरआन करीम तो फ़रमाता है कि वे ईमानदार मुख़लिस थे। अत: स्पष्ट है कि न इन जिन्नों को जिनका ज़िक्र सूरत जिन में है ताक़त है कि किसी के सिर पर चढ़ें और इन्सानों पर क़ब्ज़ा कर सकें या उन्हें सता सकें और न उनमें किसी को कुछ लाकर देने की ताक़त है ऐसे जिन्न केवल वही लोगों के दिमाग़ में हैं क़ुरआन करीम ऐसे जिन्नों को स्वीकार नहीं करता। उसने तो जो जिन्न पेश किए हैं उन्हीं किस्मों के हैं जो मैंने वर्णन किए और उन क़िस्मों में से जो जिन्न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए वे यहूदी थे जिन्होंने कलाम सुना अपने घरों को चले गए और आख़िर ईमान लाने का फ़ैसला किया और अपनी क़ौम को पैग़ाम पहुंचा दिया। अरब से हज़ारों मील दौर के बसने वाले थे बाद में नहीं कहा जा सकता कि उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कोई ख़बर मिली भी या नहीं मिली इस कारण से वे इस्लामी जंगों में व्यवहार में कोई हिस्सा न ले सके।

तीसरा सबूत इस बात का कि ये जिन्न इन्सान थे यह है कि अल्लाह तआला रसूलों के बारे में फ़रमाता है कि वह مِنْهُمْ और مِنْ اَنْفُسِهِمْ होते हैं। अर्थात जिनकी तरफ़ आते हैं उन्हीं की क़ौम के होते हैं। अत: फ़रमाता है وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ (अन्नहल 12/18) अर्थात क़यामत के दिन हर उम्मत का रसूल जो इन्हीं में से होगा बतौर गवाह लाया जाएगा और मुहम्मद रसूलुल्लाह को उम्मत मुहम्मदिया और इस ज़माना के लोगों पर बतौर गवाह भेजा जाएगा। अगर जिन्न भी कोई ऐसी क़ौम है जो ईमान लाती है तो इस पर गवाही कौन देगा। मूसा तो जिन्न नहीं कि इन जिनों के बारे में उनसे पूछा जाएगा जो उन पर ईमान लाए थे। इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन्सान थे। वे जिन्नों से مِنْ اَنْفُسِهِمْ की निसबत नहीं रखते। अत: आप जिन्नों के बारे में गवाह नहीं हो सकते। مِنْ اَنْفُسِهِمْ से मुराद पहले अंबया की निसबत से उनकी क़ौमें हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निसबत से आपके ज़माना के बाद के सब इन्सान । पस जिन अगर कोई इन्सानों जैसी मुकल्लिफ़ मख़लूक़ है तो वे यूंही रह जाते हैं न सवाब के अधिकारी न अज़ाब के।

चौथा सबूत इस दावा के मसर्थन में यह है कि क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا (इनाम 16/3) अर्थात हे जिन्नों और इन्सानों की जमाअतो! क्या तुम्हारे पास तुम्हारी क़ौमों में से रसूल नहीं आए थे जो तुमको मेरे निशान पढ़ कर सुनाते थे और आज के दिन के देखने से तुम को होशियार करते थे। इस आयत में साफ़ लिखा है कि जिन्नों की तरफ़ उनकी क़ौम के नबी आए और इन्सानों की तरफ़ इन्सान नबी। अब अगर जिन्न कोई दूसरी मख़लूक़ है तो इस आयत के अधीन न तो मूसा उनके नबी हो सकते हैं न नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्योंकि जिन्नों की तरफ़ इस आयत के अधीन जिन्न नबी ही आए थे। हाँ अगर जिन्नों से इन्सानों का कोई गिरोह मुराद हो तो फिर बे-शक वह मूसा आँहज़रत सल्लल्लाहो के मोमिन हो सकते हैं।

पांचवां सबूत इस बात का कि लोगों में जो जिन्न मशहूर हैं उन का कोई वजूद नहीं और यह कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो जिन्न ईमान लाए थे वे इन्सान ही थे ये है कि अल्लाह तआला जहन्नुम के बारे में फ़रमाता है فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (सूरत अलबक़रा रकूअ 3) दोज़ख़ में या तो इन्सान होंगे या फिर पत्थर इत्यादि आग को भड़काने वाले सामान होंगे। अगर जिन्न कोई मुकल्लिफ़ मख़लूक़ है तो यूं चाहिए था وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْجِنُّ وَالْحِجَارَةُ अत: जहां क़ुरआन करीम ने जिन्न क़ौम को दोज़ख़ी कहा भी है वहां इन्सान जिन्न मुराद हैं न कोई मख़लूक़।

छटा सबूत इन मोमिन जिन्नों के इन्सान होने का यह है कि

शेष पृष्ठ 12 पर

सय्यदना हज़रत खलीफतुल मसीह अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का

सन्देश

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2021 ई

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के प्यारे मैंम्बरो

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत को अपना सालाना इज्तिमा आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इसे प्रत्येक दृष्टि से सफल और बरकत वाला बनाए और इस के नेक परिणाम प्रदान करे। आमीन

मुझ से इस अवसर पर पैग़ाम भिजवाने का निवेदन किया गया है। मैं इस अवसर पर आपको कुछ ज़रूरी नसीहतें करना चाहता हूँ।

आज दुनिया में विशेष रूप से दूसरे मुस्लमान अत्याधिक व्याकुलता में पड़े हुए हैं कि उन को कोई ऐसी लीडरशिप मिले जो उन का मार्गदर्शन करे। परन्तु आप पर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया हुआ है कि ज़माने के इमाम की बैअत में आकर मार्गदर्शन मिल रहा है। ख़िलाफ़त से जुड़े रहने से नेकियों पर स्थापित रहने की ओर ध्यान दिलाया जाता है। अत: अल्लाह तआला के ये सब फ़ज़ल मांग करते हैं कि ध्यान दिलाने पर प्रत्येक बुराई से बचने का वादा करते हुए लब्बैक कहते हुए आगे बढ़ें। नेकियों पर ख़ुद भी क़दम मारें और औलाद को भी इस पर चलने की नसीहत करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी प्यारी जमाअत को तक़्वा को आदत बनाने और औलाद की तर्बीयत की नसीहत करते हुए फरमाते हैं।

"सालिह और मुत्तक़ी सन्तान की इच्छा से पहले ज़रूरी है कि वह ख़ुद अपना सुधार करे और अपनी ज़िन्दगी को मुत्तकी वाली ज़िन्दगी बनाए तब उस की ऐसी इच्छा एक नतीजा पैदा करने वाली इच्छा होगी और ऐसी औलाद वास्तव में इस योग्य होगी कि इस को बाक़ियात सालिहात कहें।"

आप इसी तरह फ़रमाते हैं

"मेरी अपनी तो यह अवस्था है कि मेरी कोई नमाज़ ऐसी नहीं है जिसमें मैं अपने दोस्तों और औलाद और बीवी के लिए दुआ नहीं करता। बहुत से माता पिता ऐसे हैं जो अपनी औलाद को बुरी आदतें सिखा देते हैं। आरम्भ में जब वह बुराई करना सीखने लगते हैं तो उन को नसीहत नहीं करते, नतीजा यह होता है कि वे दिन प्रतिदिन दिलेर और बेबाक होते जाते हैं।..... अल्लाह तआला ने सन्तान की इच्छा को इस तरह क़ुरआन में वर्णन फ़रमाया है

رَبَّنَا هَبۡ لَنَا مِنۡ اَزۡوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّۃَ اَعۡیُنٍ وَّ اجۡعَلۡنَا لِلۡمُتَّقِیۡنَ اِمَامًا

(अलफ़ुर्कान 75) अर्थात ख़ुदा तआला हमको हमारी बीवियों और बच्चों से आँख की ठंडक प्रदान फरमाए और यह तब ही मिल सकती है कि वे दुराचार तथा कदाचार की ज़िन्दगी व्यतीत न करते हों। बल्कि रहमान के बन्दों की ज़िन्दगी व्यतीत करने वाले हों और ख़ुदा को हर चीज़ पर प्राथमिकता देने वाले हों और आगे खोल कर यह कह दिया وَّ اجۡعَلۡنَا لِلۡمُتَّقِیۡنَ اِمَامًا औलाद अगर नेक और मुत्तक़ी हो तो यह उनका इमाम ही होगा इस से मानो मुत्तक़ी होने की भी दुआ है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 310 से 312 प्रकाशन 2016 ई)

अत: नेक नमूना,औलाद की नेक तर्बीयत और उन के लिए दुआ को अपनी दैनिक आदत बना लें। फिर यह भी हमेशा याद रखें कि अन्सारुल्लाह का एक बहुत बड़ा काम जैसा कि आपके अहद में भी है,ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त करना है। दुआएं करते हुए,अल्लाह तआला के फ़र्ज़ों की सम्पूर्ण अदायगी करते हुए अपने तथा अपने बीवी बच्चों में ख़िलाफ़त की सम्पूर्ण आज्ञापालन की भावना पैदा करें। इस भावना को बढ़ाएं, सतही नज़र से न देखें कि मौमेनीन की जमाअत से इनाम का वादा है। इन शब्दों पर ध्यान दें कि किन से ख़िलाफ़त का वादा है। अपने स्तर ऐसे बुलन्द करें जो एक वास्तविक मोमिन के होने चाहिऐं ताकि आप भी उन्हीं लोगों की सफ़ में शामिल रहें जिनसे इनाम का वादा है। अपने बच्चों को मस्जिदों के साथ,नमाज़ सैंटरों के साथ जोड़ें, उन्हें धर्म का इल्म प्राप्त करने की तरफ़ ध्यान दिलाएँ। क़ुरआन करीम पढ़ने की तरफ़ ध्यान दिलाएँ। फिर नौजवानी में क़दम रखने के बाद बच्चे बाहर वक़्त गुज़ारते हैं,उस वक़्त वे माताओं के हाथों में नहीं रहते, तो उन से भी ऐसे दोस्ती वाले सम्बन्ध रखें कि जब वे घर में आएं तो बाहर की बातें आपसे डिस्कस करें। उन्हें फिर अच्छे बुरे का अन्तर समझाएँ। अच्छा क्या है,बुरा क्या है,इस तरह कोशिश करके जब आप अपनी अगली नस्ल को सम्भालेंगे तो उन मौमेनीन में गिने जाएंगे जिनके साथ ख़िलाफ़त का वादा है।

अल्लाह तआला आपको नेकी और तक़्वा में तरक़्क़ी करने और औलाद की नेक तर्बीयत करने की तौफ़ीक़ दे और ख़िलाफ़त की बरकतों से भरपूर लाभान्वित फ़रमाए। अल्लाह तआला आपके साथ हो। आमीन

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तत्पर हो कर खड़ा हो जा।

(अनुवाद 38) सुख दुख लाभ हानि और विजय पराजय को बराबर समझ कर जंग के लिए हिम्मत की कमर बांध। तब तुझे पाप न लगेगा।

(श्रीमद् भगवत गीता परम संत पुर्ण धनी महारेशी शिवबर्त लाल जी महाराज प्रकाशन 1977 ई)

हमारे देश भारत में हिंदू दोस्त दशहरे का त्योहार बड़े जोश और आस्था से मनाते हैं और इस से पहले राम लीला और सीरियल में वे दृश्य पेश किए जाते हैं जो राम चन्द्र जी महाराज की लंका पर चढ़ाई कर के रावण और उसके साथियों को हलाक तथा बर्बाद करने वाले हैं। निवेदन करने वाली जैसी सोच रखने वाला अगर कोई इन्सान यह एतराज़ करे कि इन दृष्यों को देखकर तो बहुत से नौजवान रामचंद्र जी की तरह अपने दुश्मन को रावण समझते हुए तबाह-ओ-बर्बाद कर देंगे और उनके दिलों में इंतिक़ाम की भावना पैदा होगी। क्या इस कारण से दरख़ास्त देने वाला इस त्योहार के रोकने की भी दरख़ास्त देंगे।? हरगिज़ नहीं

आरोप रपने वाले ने एक यह प्रभाव देने की कोशिश की है कि क़ुरआन-ए-मजीद में अक्सर स्थानों में सकारात्मक और इन्सानियत की सफलता के लिए शिक्षाएं दी गईं हैं और दूसरी जगह क़त्ल की शिक्षा भी दी गई है और औरप लगाने वाले कि निकट नऊज़ बिल्लाह उनको हटा देना चाहिए।

आरोप लगाने वाले को चाहिए कि वह यहूद तथा नसारा की पवित्र किताब अह्दनामा क़दीम और जदीद New testament and Old testament का ध्यानपूर्वक अध्यनन करें इस में भी सकारात्मक शिक्षाएं हैं और उसके साथ-साथ जंग के बारे में भी हिदायतें दी गई हैं।

इसी तरह आरोप लगाने वाले को गीता का भी अध्ययन करना चाहिए एक तरफ़ इस में बहुत क़ीमती नसीहतें कृष्ण जी महाराज ने की हैं और दूसरी तरफ़ जंग के लिए भी उकसाया है और इसका विस्तार वर्णन किया जा चुका है।

अत: इन उदाहरणों से आरोप लगाने वाले को समझ लेना चाहिए कि क़ुरआन मजीद ने अमन की हालत के बारे में भी शिक्षाएं दी हैं और इसी तरह अगर उन पर जंग के हालात ला दिए जाएं तो उन हालात के बारे में भी राहनुमाई की है।

अगर जंग के बारे में हिदायतें न दी जातीं तो यह एतराज़ हो सकता था कि यह किताब सम्पूर्ण नहीं है। क्योंकि इस में दुश्मन से मुक़ाबले के लिए शिक्षाएं नहीं हैं। यहां तक कि इस में यह शिक्षा भी दी गई है कि अगर मुस्लमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं जाएं तो क्या करना है। इस सिलसिले में कुर्आन फ़रमाता है:

وَاِنۡ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اقۡتَتَلُوۡا فَاَصۡلِحُوۡا بَیۡنَہُمَا ۚ فَاِنۡۢ بَغَتۡ اِحۡدٰىہُمَا عَلَی الۡاُخۡرٰی فَقَاتِلُوا الَّتِیۡ تَبۡغِیۡ حَتّٰی تَفِیۡٓءَ اِلٰۤی اَمۡرِ اللّٰہِ ۚ فَاِنۡ فَآءَتۡ فَاَصۡلِحُوۡا بَیۡنَہُمَا بِالۡعَدۡلِ وَاَقۡسِطُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الۡمُقۡسِطِیۡنَ

(सूरत अलहजरात,नंबर 10)

अनुवाद : और अगर मोमिनों में से दो जमातें आपस में लड़ पढ़ें तो उनके बीच सुलह करवाओ। अत: अगर उनमें से एक दूसरी के ख़िलाफ़ सरकशी करे तो जो ज़्यादती कर रही है इस से लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के फ़ैसला की तरफ़ लौट आए। अगर अगर वह लौट आए तो इन दोनों के बीच न्याय से सुलह करवाओ और इन्साफ़ करो। अवश्य अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है।

ऊपर वर्णन की गई आयत में नीचे लिखी बातें वर्णन की गई हैं (1)अगर मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पढ़ें तो इन दोनों में सुलह करा दो (2)अगर सुलह हो जाने के बाद उन में से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिलकर उसी पर चढ़ाई करने वाले के ख़िलाफ़ जंग करो (3)फिर अगर वह दोबारा सुलह पर रज़ामंद हो जाएगी तो इन्साफ़ को समक्ष रखो।

अत: सारी बात का सार यह कि क़ुरआन-ए-मजीद की समस्त शिक्षाएं सम्पूर्ण और मुकम्मल हैं इस पर किसी प्रकार का एतराज़ और सवाल नहीं हो सकता।

जमात अहमदिया मुस्लिमा ख़िदमत करान

जमात अहमदिया मुस्लिमा का तआरुफ़

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की ज़ाहिरी और माअनवी हिफ़ाज़त और सुरक्षा के लिए सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त राशिदा का मुबारक निज़ाम जारी फ़रमाया और जब यह निज़ाम बाक़ी न रहा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी के अनुसार मुजद्दि की बिअसत का सिलसिला शुरू हुआ।

हदीस शरीफ़ में आया है :

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ
یَبۡعَثُ لِهٰذِهِ الۡاُمَّةِ عَلٰی رَاۡسِ کُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنۡ یُّجَدِّدُ لَهَا دِیۡنَهَا

(अबू दाऊद, भाग 2 पृष्ठ 212किताबुल मलाहिम)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत के लिए हर सदी के सिर पर एक मुजद्दिद मबऊस फ़रमाया करेगा जो आकर धर्म का नवीनीकरण करेगा

क़ुरआन मजीद की ज़ाहिरी और माअनवी हिफ़ाज़त के लिए हर हिज्री सदी के आरम्भ में अल्लाह तआला किसी मुजद्दिद को भेजता रहा जो कि क़ुरआन मजीद की सही शिक्षाओं को दुनिया के सामने पेश करता। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी पेशगोई फ़रमाई थी कि चौधवीं सदी हिज्री के आरम्भ में अल्लाह तआला एक ऐसे मुजद्दिद को भेजेगा जो इस उम्मत का मसीह मौऊद होगा और वह सूरत अलुजमुअ की भविष्यवाणी के अनुसार सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी बिअसत का द्योतक होगा। जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के अक़ीदे के अनुसार वह मौऊद शख़्स हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम हैं आपने अल्लाह तआला के हुक्म से चौदहवीं सदी हिज्री के छटे साल 20 रजब 1306 हिजरी 23 मार्च 1889 ई को जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की स्थापना फ़रमाईय और पहले दिन 40 लोग बैअत कर के इस मुबारक जमाअत में शामिल हुए थे बाद में दिन प्रितिदिन इस संख्या में इज़ाफ़ा होता चला गया। अलहमदु लिल्लाह इस समय 212 मुल्कों में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की स्थापना हो चुकी है और दिन प्रतिदिन यह हर दृष्टकिोण से तरक़्क़ी कर रही है

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम ने इलाही तफ़हीम के अनुसार यह ऐलान भी फ़रमाया कि

"अल्लाह तआला ने अपने वाादा के अनुसार कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ (सूर, सूरत नम्बर 15 आयत नम्बर 10)

क़ुरआन शरीफ़ की अज़मत को क़ायम करने के लिए चौदहवीं सदी के सिर पर मुझे भेजा।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 433)

"क़ुरआन-ए-करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है इस आरम्भिक ज़माना में इन्सान के अंदर छिपी हुई और फ़रामोश हुई सच्चाइयों और अच्छाइयों को याद दिलाने के लिए आया था। अल्लाह तआला के इस सच्चे वाादा की दृष्टि से اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ (सूर,नम्बर 15 आयत10)इस ज़माने में भी आसमान से एक मुअल्लिम आया जो وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ (सूरत अल्जुम्अ ,नम्बर 62 आयत नम्बर 4) का मिस्दाक़ और मौऊद है। वह वही जो तुम्हारे बीच बोल रहा है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 60)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का जन्म 14 शवाल 1250 हिज्री 13 फरवरी 1835 ई को हुई। आपकी वफ़ात 24 रबी उल अव्वल 1326 हिजरी 26 मई 1908 ई को हुई। वफ़ात के समय क़मरी लिहाज़ से आपकी उम्र लगभग 76 साल थी जिस तरह सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम शुरू हुआ और हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्हो ख़ुलफ़ाए राशिदीन थे इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे प्रादर्भव के मज़हर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद चौदहवीं सदी हिज्री के 26 वीं साल 25 रबी उलअव्वल1327 हिजरी 27 मई 1908 को एक बार फिर अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त राशिदा का क़ियाम फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद की सूरत नम्बर 56 मैं फ़रमाया है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उन से अल्लाह ने मज़बूत वादा किया है उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि हज़रत इमाम महदी जो कि उम्मती नबी होंगे उनके बाद ثُمَّ تَکُوۡنُ خِلَافَةٌ عَلٰی مِنۡهَاجِ النُّبُوَّةِ नबुव्वत के तरीक़ा पर ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी होगा। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार जिन खलिफ़ा किराम को ख़िलाफ़त पर आसीन फ़रमाया उनके नाम क्रम से नीचे वर्णित हैं

(1) हज़रत हाजी उल-हरमीन मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो 27 मई 1908 से 13 मार्च1914 ई वफ़ात)

(2) हज़रत हाजी उल-हरमीन मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो 14 मार्च 1914 ई 8 नवम्बर 1965 ई वफ़ात)

(3) हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहिमहुल्लाह तआला मौरख़ा 8 नवम्बर 1965 ई से 8 जून 1982 ई वफ़ात)

(4) हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहिमहुल्लाह तआला 10 जून 1982 ई से 19 अप्रैल 2003 ई वफ़ात)

(5) हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब नसरहुल्लाह तआला 22 अप्रैल 2003 ई

दुआ है अल्लाह तआला हमेशा आपको सेहत तथा सलामती वाली लम्बी उम्र प्रदान फ़रमाए। आमीन

हिफ़ाज़त क़ुरआन मजीद और जमाअत अहमदिया

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा ने हर दौर में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन मजीद की तरफ़ मंसूब होने वाले आरोपों के उत्तर दिए हैं और हमेशा क़ुरआन मजीद का ऊंचा करने के लिए सेवाएं दी हैं इसकी वज़ाहत इंतिहाई सार गर्भित रूप से दर्ज है।

19 वीं सदी के आख़िर और बीसवीं सदी के शुरू में हिन्दुस्तान पर बर्तानवी सामराज्य की हुकूमत थी इस दौर में इस्लाम विरोधियों की तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम को और आप पर नाज़िल होने वाले क़ुरआन-ए-मजीद को बहुत अधिक आरोपों का निशाना बनाया जा रहा था और उन आरोपों के कारण से बहुत से मुस्लमान इस्लाम से बद-दिल हो कर ईसाईयत की आग़ोश में चले गए थे और इस ज़माना के हालात को देखकर ऐसा लगता था कि शायद इस्लाम अब ज़्यादा देर इस मुल्क में क़ायम नहीं रह सकेगा। उस ज़माना के शायरों की शायरी से भी अंदाज़ा होता है मशहूर शायर अलताफ़ हुसैन हाली(1837-1914) ने 1879 में अपनी मुसद्दस में लिखा कि

रहा दीन बाक़ी न इस्लाम बाक़ी
इक इस्लाम का रह गया नाम बाक़ी

फिर मिल्लत-ए-इस्लामीया की एक बाग़ से उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि

फिर इक बाग़ देखेगा उजड़ा सरासर
जहां ख़ाक उड़ती है हर-सू बराबर
ये आवाज़ पैहम आ रही है
कि इस्लाम का बाग़ वीरान यही है

इस्लाम पर विरोधियों की तरफ़ से एतराज़ात का यह सिलसिला जारी था कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम ने इन आरोपों के रद्द-तथा खम्डन के लिए 1880 से1884 ई में अपनी मारूफ़ किताब बराहीन अहमदिया रचना फ़रमाई। बराहीन अहमदिया की में आप ने इस्लाम के विरोधियों को मुख़ातब करते हुए तहरीर फ़रमाया कि मैंने जितने क़ुरआन-ए-मजीद के सच्चे होने के तर्कतथा प्रमाण लिखे हैं अगर कोई अपनी इल्हामी किताब में से आधे या तिहाई या चौथाई या पांचवां हिस्सा निकाल कर लिख दे या अगर मेरी किताब में लिखी दलीलों को क्रम से तोड़ दे तो में किसी शंका के अपनी जायदाद जो दस हज़ार रुपए की है इसके सुपुर्द कर दूंगा और उसका जायज़ा तीन जज लेंग और इन्ही का फ़ैसला आख़िरी होगा। यह वह पहला प्रतिरक्षा थी जो आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-मजीद की फ़रमाई। इस के बाद क़ुरआन-ए-मजीद पर होने वाले आरोपों के दांत तोड़ने वाले और तसल्ली देने वाले जवाब देने और उसकी ज़ाहिरी तथा माअनवी मुहाफ़िज़त का सिलसिला आपकी वफ़ात तक रहा।

इस के बाद हर दौर में आपके ख़लीफ़ा(जांनशीन) ने क़ुरआन की रक्षा और उसकी तब्लीग़ तथा प्रचार पर उसकी ज़ाहिरी तथा माअनवी हिफ़ाज़त का फ़रीज़ा अदा किया और वर्तमान समय में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद नसरहुल्लाह तआला यह फ़र्ज़ बहुत उत्तम तरीका से से अदा फ़र्मा रहे हैं। अब तक जमाअत अहमदिया मुस्लिमा 100 से अधिक भाषाओं में सम्पूर्ण क़ुरआन मजीद का या उसकी चयनित आयतों का अनुवाद प्रकाशित कर चुकी है।

भारत की निम्निखित भाषाओं में क़ुरआन मजीद का सम्पूर्ण अनुवाद अरबी मूल क़ुरआन के साथ कादियान (पंजाब) से प्रकाशित हो चुका है और वे ज़बानें ये हैं।

(1)उर्दू (2)हिन्दी (3)अंग्रेज़ी (4)पंजाबी (5)डोगरी (6)बंगला (7)उड़ीया (8) आसामी (9)पंजाबी (10) मलयालम (11)तामिल (12)कन्नड़ (13)मराठी (14) गुजराती (15)तेलुगू (16) कश्मीरी

इन अनुवादों की प्रकाशन का उद्देश्य यह है कि हर इन्सान अनुवाद की मदद

पृष्ठ 1 का शेष

पर कितनी सुधारणा था। चमत्कार की भी ज़रूरत नहीं समझी और हक़ीक़त यह है कि चमत्कार वह व्यक्ति मांगता है जो हालात से परिचित न हो और जहां ग़ैरियत हो और वह तसल्ली पाने के लिए कहता हो। लेकिन जिसको इन्कार ही नहीं है इस को चमत्कार की क्या ज़रूरत। अत: हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रास्ता ही में सुनकर ईमान ले आए और जब मक्का पहुंचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर पूछा कि क्या आपने नबुव्वत का दावा किया है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ ठीक है। इस पर हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने कहा कि आप गवाह रहें मैं आपका पहला मुसद्दिक़ हूँ लेकिन यह केवल कथन ही न था बल्कि अपने कर्म के साथ उस को समान कर के दिखाया और ऐसा समान किया कि अन्तिम क्षण तक उसे निभाया और मरने के भी बाद साथ न छोड़ा।

कर्म और कथन में समानता

वास्तव में इस बात की बहुत बड़ी ज़रूरत है कि इन्सान का कर्म और कथन आपस में एक समानता रखते हों। यदि उनमें समानता नहीं तो कुछ भी नहीं। इस लिए अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (अलबकर: 45) अर्थात तुम लोगों को तो नेकी की बात करते हो, परन्तु अपने आपको इस बात नेकी का सम्बोधित नहीं बनाते, बल्कि भूल जाते हो। और फिर दूसरी स्थान पर फ़रमाया لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ़:3) मोमिन को दो रूप धारण नहीं करने चाहिए। यह बुज़दिली और नफ़ाक़ है इससे हमेशा दूर होता है। हमेशा अपने कथन और कर्न को ठीक रखो और उन में समानता दिखाओ। जैसा कि सहाबा रज़ि ने अपनी ज़िन्दगियों में दिखाया, ऐसा ही तुम भी उनके पद चिन्हों पर चल कर अपनी सच्चाई और वफ़ादारी के नमूने दिखाओ।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह अन्हो का नमूना अपने सामने रखो

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि के नमूने को हमेशा अपने सामने रखो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ज़माना पर ग़ौर करो जब हर तरफ़ से क़ुरैश शरारत पर तुले हुए थे और कुफ़्फ़ार ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल का षडयन्त्र किया वह ज़माना बड़ी परीक्षा का ज़माना था। आज जितने तुम बैठे हुए हो अपने अपने स्थान पर सोचो कि यदि इस किस्म की कोई परीक्षा आ जाए तो कौन है जो साथ दे। या जैसे गर्वनमेंट ही की तरफ़ से यह छानबीन शुरू हो कि किस-किस ने इस व्यक्ति की बैअत की है। तो कितने होंगे जो दिलेरी के साथ कह दें कि हम बैअत करने वालों में दाख़िल हैं। मैं जानता हूँ कि कइयों के हाथ पांव सुन हो जाएं। उन्हें शीघ्र अपनी जायदादों और रिश्तेदारों के ख़्याल आ जाएं कि हमें ये छोड़ने पड़ेंगे। मुश्किलों के समय साथ देना हमेशा सम्पूर्ण ईमान लोगों का काम होता है। तो इस ज़माना में जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सख़्त परीक्षा का ज़माना था और आपके क़तल के मंसूबे हो रहे थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने वह दोस्ती का हक़ अदा किया कि इस की तुलना दुनिया में पाई नहीं जाती। यह ताक़त और शक्ति ईमान के बिना नहीं आती। जब तक व्यवहारिक तौर पर इन्सान ईमान को अपने अंदर दाख़िल न करे कुछ नहीं बनता। बहाने करना उस वक़्त तक दूर ही नहीं होता। व्यावहारिक रूप से जब आग लगी हुई हो तो साबित-क़दम निकलने वाले थोड़े ही होते हैं। हज़रत मसीह के हवारी इस आख़िरी घड़ी में जो मुसीबत की घड़ी थी उनको छोड़कर भाग गए और कई ने सामने ही लानत भी दी।

हक़ीक़त में यह बड़ी इबरत का स्थान है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो पर एक वक़्त आया था कि मुस्लिम ने 70 हज़ार आदमियों के साथ नमाज़ पढ़ी और दुआ की। किसी ने आकर यज़ीद की ख़बर दी सब के सब भागे निकले।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 338 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

से किसी सीमा तक क़ुरआन के अर्थों और उसके मआरिफ़ को समझ ले कि इस के लिए इस में क्या रुहानी ,धार्मिक पैग़ाम दिया गया है और हज़ारों लोग इस से फ़ायदा उठा रहे हैं। अलहमदु लिल्लाह अली ज़ालिक। (शेष....)

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 2 December 2021 Issue No.48

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

मस्नद अहमद बिन हंबल में आता है कि قال (رسول الله صلعم) لهم لقد اعطیت اللیلة خمسًا ما اعطیهن احدٌ قبلی امّا انا فارسلت الی الناس کلهم عامة و کان من قبلی انما یرسل الی قومه क़ाल (भाग 2, पृष्ठ 222) अर्थात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ तहज्जुद पढ़ कर जो पहरादार आपके पीछे नमाज़ में शामिल हो गए थे उनसे फ़रमाया कि आज पाँच ख़ुसूसीयतें मुझे ऐसी प्रदान की गई हैं कि इस से पहले किसी को ये ख़ुसूसीयतें नहीं मिलीं। एक तो यह कि मैं सब क़ौमों की तरफ़ बिना किसी भेद के भेजा गया हूँ और जो मुझसे पहले नबी गुज़रे हैं वे सिर्फ अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे गए होते थे (आगे बाक़ी चार ख़ुसूसीयतें वर्णन की गई हैं। यह भी याद रहे कि इस रात को पाँच ख़ुसूसीयतें जमा कर के आपको बताई गई थीं। वर्ना कुछ ख़ुसुसीआत जैसे यही जो ऊपर वर्णन हुई है इस्लाम के शुरू ज़माना से ही आपको मिल चुकी थीं।) इस हदीस के होते हुए कौन कह सकता है कि ये जिन्न जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए कोई और मख़लूक़ थी क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम साफ़ बताता है कि वे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मोमिनों में से थे। अगर वे बनी इस्राईल में से न थे तो उनका मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाना जायज़ ही किस तरह हो सकता है। अगर एतराज़ हो कि क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰی فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا (सूरत मुज़म्मिल रुकूअ 1)मूसा फ़िरऔन की तरफ़ भी मबऊस थे हालाँकि फ़िरऔन बनी इस्राईल में से न था तो इस का जवाब यह है कि क़ौम से मुराद कभी नस्ली क़ौम होती है और कभी मुल्की जैसे हिन्दुस्तान में विभिन्न क़ौमें बस्ती थीं उनमें जो नबी आता था वह हिन्दुस्तानी क़ौम की तरफ़ मबऊस होता था न कि ब्रहमन या राजपूत की तरफ़ क्योंकि एक जगह रहने वाली क़ौमों को सहूलत के लिए एक क़ौम गिनती कर लिया जाता है। अत: फ़िरऔन के साथ और इस की क़ौम के साथ चूँकि हज़रत मूसा हुकूमत और सियासत और क़ानून और तमद्दुन के माध्यम से बंधे हुए थे उनको तो एक क़ौम समझ लिया गया मगर जिन्नों को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से क्या तुलना थी। हुकूमत की दृष्टि से या सियासत के लिहाज़ से या क़ानून के लिहाज़ से या तमद्दुन के लिहाज से कि उनको भी मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने का हुक्म दिया गया। अगर कहो कि हज़रत मूसा तो बनी इस्राईल या उनके साथ रहने वाली क़ौम की तरफ़ ही भेजे गए थे मगर जिन्न अपने तौर पर उन पर ईमान ले आए थे तो यह भी ठीक नहीं है हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की एक घटना इंजील में वर्णन हुई है जिससे मालूम होता है कि उन्होंने दूसरी क़ौमों को अपनी जमाअत में शामिल होने की इजाज़त तक न दी बल्कि जब उनसे एक ग़ैर क़ौम के आदमी ने तब्लीग़ करने के लिए कहा तो आपने फ़रमाया कि “लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देनी अच्छी नहीं”(मति, बाब15 से 26)अत: यह भी दरुस्त नहीं कि वे अपनी मर्ज़ी से ईमान ले आए थे क्योंकि अगर जिन्न कोई मुकल्लिफ़ क़ौम है तो उस के लिए सिर्फ इस नबी पर ईमान लाना फ़र्ज़ है जो اَنْفُسِهِمْ हो। मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाना उन के लिए जायज़ न था। अत: क़ुरआन-ए-करीम की आयतें और ऊपर वर्णित हदीस की दृष्टि से कम से कम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जिन्नों के लिए अलग नबी मबऊस होने ज़रूरी थे जो ख़ुद उनमें से होते। इसी तरह जिन्नों की मुख़्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ अलग अलग नबी मबऊस होने चाहिए थे।

सातवाँ सबूत इन जिन्नों के इन्सान होने का यह है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा अल्लाह तआला क़ुरआन करीम मे यह फ़रमाता يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (सूरह आराफ़ रकूअ 20)इस जगह जिन्नों को रिसालत में शामिल नहीं किया। अगर जिन भी कोई अलग क़ौम है और इस के लिए भी आप पर ईमान लाना ज़रूरी था या जायज़ ही था तो यूं फ़रमाना चाहिए था कि يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ وَالْجِنُّ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا मगर यह तो क़ुरआन करीम में कहीं भी नहीं आया। अत: जो जन आप पर ईमान लाए वे क़ुरआन की व्याख्या के अधीन इन्सानों ही में से थे और इसी कारण से आप पर ईमान लाने के योग्य थे।

एक और आयत इस विषय के बारे में इस से भी स्पष्ट है और वह सूरत सुबा की आयत وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ (रुकूअ 3/9)काफ़ कफ़्फ़ से निकला है जिसके मूल अर्थ जमा करने और रोकने के हैं। अत: आयत के अर्थ यह हुए कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमने तुझे सिर्फ इस लिए मबऊस किया है कि तू इन्सानों को जमा करे और किसी इन्सान को अपनी तब्लीग़ से बाहर न रहने दे। अब देखो अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि तुझे सिर्फ इन्सानों को जमा करने के लिए भेजा है और कुछ लोग ख़्याल करते हैं कि इन्सानों के सिवा कोई और मख़लूक़ भी है और वह भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की योग्य है। अत: हक़ीक़त यह है कि जिस तरह इन्सानों में कोई आप की दावत से बाहर नहीं इन्सानों के सिवा कोई मख़लूक़ आप पर ईमान लाने के लिए योग्य भी नहीं। इस कारण से जिन मोमिन जिन्नों का ज़िक्र क़ुरआन-ए-करीम में किया गया है वे इन्सान ही थे कोई और मख़लूक़ नहीं थे।”

(तफ़सीर कबीर, भाग 4 पृष्ठ 66 से 68 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

हुज़ूर हर अहमदी आप से बेमिसाल मुहब्बत करता है जिस की मिसाल किसी और दुनियावी लीडर में नहीं मिलती।

जर्मनी में आबाद अरब अहमदियों के साथ हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला के साथ वर्चुअल मुलाक़ात।

दिनांक 4 अप्रैल इतवार जर्मनी में रहने वाले अरब क़ौमीयतों से सम्बन्ध रखने वाले 56 अहमदी लोगों ने बैयतुस्सबूह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से ऑनलाइन मुलाक़ात की उनका सम्बन्ध मुल्क शाम, लबनान, यमन , अल-जज़ाइर, फ़िलस्तीन, मिस्र और मराक़श से था। उनमें से 33 अहमदी लम्बा सफ़र तय कर के बैयतुस्सबूह पहुंचे थे।

सबसे पहले तिलावत क़ुरआन करीम हुई जो मुलूक-ए-शाम से सम्बन्ध रखने वाले अहमदी दोस्त Mosab Shweri ने की। बाद में आदरणीया हफ़ीज़ुल्लाह भरवाना साहिब मुबलिग़ सिलसिला इंचार्ज अरब डैसक जर्मनी ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश की। उन्होंने बताया कि इस वक़्त जर्मनी में 400 अरब बाक़ायदा जमाअत के निज़ाम में शामिल हैं। उनसे स्थायी सम्पर्क और उनकी धार्मिक तालीम तथा तर्बीयत के लिए ऑनलाइन क्लासों का प्रबन्ध है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिल अज़ीज़ ने हर अरब से इस का नाम ,क़ौमीयत , ख़ानदान का परिचय हासिल किया और यह कि अहमदियत कब क़बूल की और फ़ैमिली में और कौन कौन अहमदी है। सवा एक बजे शुरू होने वाली मुलाक़ात सवा घंटा जारी रही।

इस मुलाक़ात में शामिल हर अरब अहमदी बहुत अधिक ख़ुश था और जज़्बात में एक दूसरे को मुबारकबाद दे रहे थे। मुलाक़ात में शामिल मुल्क शाम के बाशिंदे मुहम्मद वलीद फ़लीवन ने बताया कि अमीरुल मोमिनीन से यह मुलाक़ात बहुत उम्दा थी। इस मुलाक़ात से एक मुहब्बत का एहसास हुआ जो सारे मोमिनों के दिलों को जोड़ कर रखती है। اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ। हुज़ूर हर अहमदी से बेमिसाल मुहब्बत करते हैं जिसकी तुलना दुनिया के किसी लीडर में नहीं मिलती।

मुकर्रम अहमद अल्आक़िल साहिब जो दो सौ किलोमीटर दूर शहर Dambakh से तशरीफ़ लाए थे और आज ही बैअत करके जमाअत में दाख़िल हुए थे ने अपने तास्सुरात बयान करते हुए बताया कि वह बात जिसने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह जमाअत का मुनज़्ज़म होना है। अहमदियों का एक दूसरे का सम्मान करना, मुहब्बत से पेश आना मुझे भाता है। मेरा विचार यह था कि जब अमीरुलमोमनीन से मिलूँगा तो वह मुस्लमान बादशाहों की तरह का दरबार होगा। अमीरुल मोमनीन से मुलाक़ात में आपकी ख़ूबसूरत मुस्कुराहट ने मुझे बेहद प्रभावित किया। आपके चेहरे पर नज़र पड़ने पर मैंने उनके चेहरे पर नूर देखा। आपके अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू में पिदराना शफ़क़त महसूस हुई। मैंने क़रीब से ख़िलाफ़त की नेअमत को महसूस किया। अल्लाह तआला ख़िलाफ़त की नेअमत को बख़्शे।

मुलाक़ात करने वाले सभी अहमदी के ऐसे ही भावनाएं थी । अरब डैसक जर्मनी और तब्लीग़ विभाग ने मेहमानों की आय पर उनको ख़ुश-आमदीद कहा और मुलाक़ात हाल की तैयारी , मेहमानों को क्रम से अपने स्थानों पर बिठाने और नज़्म ज़बत के सारे काम बहुत उत्तम तौर पर अंजाम दिए। ज़याफ़त विभाग ने मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी में कोई कमी न उठा रखी और दिन ढले सब मेहमान अपने अपने शहरों को विदा हुए।

(इर्फ़ान अहमद ख़ान, प्रतिनिधि अलफ़ज़्ल इंटरनैशनल जर्मनी)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad